

दानकोपयोगी—तुलसीमाला अंक ६

# लक्ष्मिपत्-पाराधार-खट्टिति

मध्यहन्त्री

चतुर्वेदी हारला प्रताद शासनी

सन १८८८

# संक्षिप्त-पाराशर-सृति

—:o:—

प्रथमं

श्री पाराशर मुनि की वनायी हुई सृति के तुने हुए  
प्रकरणों का सरल हिन्दी भाषा में भावार्थ

संग्रहकर्ता

चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद (श्रद्धालौ)

—:o:—

“ कृते तु मानवो धर्मखेतायां गीतमः सृतः ।  
द्वापरे शद्वलिक्षिती फली पाराशरः सृत. ॥ ”

— पाराशर सृतिः

प्रकाशक  
नेशनल प्रेस, प्रयाग

द्वितीय संस्करण ]

[ मूल्य ।। )

# उपहार

—०—

“बालकोपयोगी-पुस्तकमाला” का

यह नवाँ अङ्क, हम उन कोमल हृदय  
और भेले भाले बच्चों को उपहार में  
देते हैं, जो बड़े होने पर अपने देश के  
नेता बनना चाहते हैं और जिनकी  
नीतिक-ज्ञान वृद्धि के साथ साथ, इस  
देश की सम्पत्ति बढ़ सकती है।

संग्रहकर्ता

# ग्रन्थ-परिचय

सनातन<sup>१</sup> धर्म वाले जिस तरह, चार वेद<sup>२</sup>, चार उपवेद<sup>३</sup> क्षः वेदाङ्ग<sup>४</sup>, १०—उपनिषद<sup>५</sup>; क्षः दर्शन<sup>६</sup> और १८ पुराण<sup>७</sup> मानते मैं, वैसे ही वे वीस सूतियाँ<sup>८</sup> भी मानते हैं। अर्थात् १-मनु, २-अत्रि, ३-विष्णु, ४-हारीत, ५-याज्ञवल्क्य, ६-उशना, ७-अङ्गिरा, ८-यम, ९-आपस्तम्ब, १०-सम्बर्त्त, ११-कात्यायन, १२-बृहस्पति, १३-पाराशर, १४-व्यास, १५-शङ्ख, १६-लिखित, १७-दक्ष, १८-गौतम, १९-शातातप और २०-वसिष्ठ-ये वीस सूतियाँ हैं।

१ जो धर्म अनादि काल से चला आता है, उसे “सनातन धर्म” कहते हैं।

२ १ ब्रह्म-वेद, २ यजुर्वेद, ३ साम-वेद और ४ अथर्व-वेद।

३ १ आयुर्वेद, २ धनुर्वेद, ३ गान्धर्व-वेद और ५ अर्थ-वेद।

४ १ शिक्षा, २ कल्प, ३ व्याकरण, ४ निरुक्त, ५ छन्द, ६ ज्योतिष।

५ सब के नाम गिनाने से विषय वह जायगा। उपनिषदों की गणना में पण्डितों में परस्पर मतभेद भी है। विधर्मियों ने उपनिषदों में भी बहुत कुछ अपना मेल भिलाया है।

६ १ मीमांसा, २ सर्वाल्प्य, ३ योग, ४ वेदान्त, ५ न्याय और ६ वैशेषिक।

७ अठारह पुराणों के नाम हम “श्री मङ्गागवत्-सप्त्रह” की भूमिका में लिख चुके हैं। वहाँ देखो।

८ मन्त्रविष्णु हारीत याज्ञवल्क्योशनोऽङ्गिरा।।

यमापस्तम्बसम्बर्त्तः कात्यायन बृहस्पति ॥

पाराशर व्यास शङ्ख लिखिता दक्ष गौतमौ ।

शातातपो वसिष्ठश्च धर्मशाख प्रयोजका ॥

—याज्ञवल्क्य-सूत्रः अ० । श्लो० ४-५.

इन दोसों स्मृतियों में मनु-स्मृति<sup>१</sup> प्रधान मानी जाती है। क्योंकि वेद में लिखा है कि जो मनु कहते हैं, वह प्राणियों के लिये इस संसार के दोगों को छुड़ाने के लिये औपर है। पर पाराशर जी ने लिखा है कि सत्युग के लिये मनु-स्मृति, ब्रेता-युग में गौतम-स्मृति, द्वापर-युग में सद्गुरु-स्मृति और कलियुग के लिये पाराशर-स्मृति मानी जाती है<sup>२</sup>।

पाराशर-स्मृति के बारे में एक चात विचारने की है। प्रयाग के एक पुस्तकालय के सुची-पत्र में हमने पाराशर के नाम से दो स्मृतियों के नाम पाये। वृहत्-पाराशर-स्मृति दूसरी केवल पाराशर-स्मृति। किन्तु दुर्भाग्यवश हमको वृहत्-पाराशर-स्मृति के उस पुस्तकालय में दर्शन न हुए। इस लिये हम यह नहीं कह सकते कि कलियुग के लिये वृहत्-पाराशर-स्मृति को या लघु पाराशर-स्मृति को मानना चाहिये। सन्देहावस्था में हमें दोनों पाराशर-स्मृति कलियुग के प्राणियों के लिये उपयोगी और प्रामाणिक इस लिये माननी पड़ती है कि दोनों स्मृतियों के प्रमाण अन्य धर्माचार्यों ने अपने अपने ग्रन्थों में उहूत किये हैं।

प्रसद्गुरा पढ़ने पर हम अपने सनातन धर्मावलम्बियों के सतर्क कर देना चाहते हैं कि वर्तमान समय में हमारे मान्य धर्मग्रन्थों की दुर्दशा की जा रही है। आज से पचास साढ़ घण्ठ बाद, जब संस्कृत विद्या, श्रावीन विद्याओं की श्रेणी में केवल गिनी जाने लगेगी—तब उस समय लोग वृहद गीता और

१ सक्षिप्त मनु-स्मृति छपी तथ्यात है, मूल्य ।—) है।

२ कृते तु मानवो धर्मस्वेतायां गौतमं स्मृतः।

द्वापरे शङ्कु लिखितौ, कलौपाराशरः स्मृतः॥

बाल-गीता, वृहद्-भागवत और बाल-भागवत के चक्र में पढ़ेंगे। इसके अतिरिक्त सनातन धर्मावलम्बियों के लिये एक और भी विष-वृक्ष बोधा जा रहा है। जिन आधुनिक पन्थानुयायियों के संस्कृत-विद्यालयों में वर्ण भेद का विचार छोड़ फर—ऊँच नीच सभी एक तराजू में तौले जा रहे हैं, वहाँ उनके नाम भी, भगेलू, सकेलू बदल कर, हरीत, पराशर भरद्वाज, याज्ञवल्मी आदि रखे जा रहे हैं। दस बीस वर्ष बाद, जब वे पढ़ लिख कर तथ्यार होंगे तब उनकी भी हारीत-सहिता, पाराशर-सहिता आदि सहिताएँ तथ्यार होंगी और खार्थी लोग उन्होंने के प्रमाण उठात कर, भोले भाले लोगों को फँसावेंगे। इस लिये अब हमको प्राचीन ऋषियों के बनाये ग्रन्थों की, घस्तों में बांध कर ही रक्ता न करनी चाहिये, किन्तु उनका प्रचार कर के; उनकी व्यापकता बढ़ानी चाहिये।

पाराशर-सूति में वारह अध्याय है। प्रथम अध्याय में, ६४ ; दूसरे में, १६ ; तीसरे में, ५४ ; चौथे में, २६ ; पाँचवें में, २५ , छठवें में, ७१ ; सातवें में, ४३ ; आठवें में, ४६ ; नवें में, ६२ ; दसवें में, ४२ , यारहवें में, ५३ ; और वारहवें अध्याय में, ७४ श्लोक है। इस हिसाब से सब मिला कर, ५८२ श्लोक होते हैं। पर उसी सूति के वारहवें अध्याय के ७३ वें श्लोक के अनुसार इस सूति में ५६६ श्लोक<sup>१</sup> होने चाहिये। अर्थात् सूति में लिखी हुई श्लोक-संख्या और उपलब्ध श्लोक-संख्या में १३ श्लोकों का अन्तर पड़ता है। सम्भव है सप्रह श्लोक पुस्तक लेखकों के प्रमाद से भिन्न भिन्न अध्यायों में छूट गये हों। या सम्प्रदाय-देवियों ने उन्हें जान बूझ कर निकाल डाले हों।

<sup>१</sup> एतत् पाराशर शास्त्र श्लोकानां शतपञ्चकम् ।

द्वितीया समाप्तुक धर्म शास्त्रस्य संग्रहः ॥

यह कहते हमें सझौंच नहीं होता कि इस स्मृति का विषय-क्रम बड़ा गड़बड़ है। जिस तरह मनु-स्मृति में क्रम से विषय संग्रह किये गये हैं, वैसे इस स्मृति में नहीं हूप। कहीं कहीं एक एक वात को दो दो बार लिखा है। यह दोष के बल स्मृति के संग्रहकर्ता का है। व्यभिचारिणी लियों के प्रायश्चित्त का विधान इस स्मृति में विस्तृत रूप से दिया हुआ है। पर हमने उसे इस पुस्तक में लिखना अनुपयोगी और अनुचित समझा। इस लिये उस विषय को छोड़ दिया है।

इस स्मृति में, स्मृति-कार ने गो-हत्या ब्रह्म-हत्या और सुरापान को महापातक घतला कर, उनके प्रायश्चित्त विस्तृत रूप से घतलाये हैं। गो को पालना, प्रत्येक हिन्दू गृहस्थ; जब तक अपना धर्म न समझेगा, तब तक कलियुग में गो-वंश की रक्षा नहीं हो सकती। इस स्मृति के नवें अध्याय के देखने से मालूम होगा कि गो को ज़रा भी कष्ट देने वाले को प्रायश्चित्त करने की विधि घतलायी गयी है। इसका धर्म से तो सम्बन्ध है दो, पर इसका यह भी एक कारण है कि भारतवर्ष कृषि-प्रधान देश है। यहाँ की कृषि का प्रधान अङ्ग गो-वंश है। इस देश के धर्म-शास्त्र बनाने वालों ने गो-वंश की दृष्टि के लिये, ऐसे नियमों की रचना की है।

पाराशर के मतानुसार कन्या का विवाह वारह वर्ष<sup>१</sup> के पहिले ही हो जाना चाहिये। कन्या के विवाह के बारे में पं० काशीनाथ ने जो श्लोक शीघ्रवोध नाम के संग्रह में संग्रहीत किये हैं और जिनमें कन्या की गौरी, रोहिणी आदि संज्ञाएँ लिखी हैं—वे असल

<sup>१</sup> प्राते तु द्वादशे वर्षे थः कन्या न प्रयच्छति ।

मासि मासि रजस्तस्याः पिवन्ति पितरः स्वयम् ॥

में पाराशर-स्मृति ही के श्लोक हैं। इस स्मृति में रजस्वला होने के पूर्व कन्या का विवाह कर देना माता पिता का कर्तव्य बतलाया गया है। पर बर को उप्र कितनी होनी चाहिये—इस विषय पर कुछ भी विवार नहीं किया गया।

इस स्मृति के आठवें अध्याय में समय समय पर धर्म की व्यवस्था में परिवर्तन करने का अधिकार भी दिया गया है। आठवें अध्याय के १५ वें श्लोक में लिखा है कि “वार या तीन वेद जानने वाले प्राह्णण जो कुछ व्यवस्था दें—वही धर्म-सम्मत व्यवस्था माननी होगी, पर उनसे भिन्न यदि हजारों आदमी व्यवस्था दें, तो वह व्यवस्था न माननी चाहिये”।

पर पाराशर मुनि ने जहाँ धर्म की रक्षा पर अधिक ज़ोर दिया है, वहाँ धर्म पालन के समय शरीर की रक्षा का ध्यान रखना भी प्राणीमात्र का कर्तव्य ठहराया है। मुनि की आशा है कि ‘विपत्ति पड़ने पर जैसे बने वैसे—सीधे या डेढ़े बन कर, दीन आत्मा का उद्धार करे। पीछे जब अवसर मिले, तब धर्म कर्म करें। प्रथात् यदि शरीर बना रहा तो। धर्म हो जायगा और यदि शरीर ही न रहा तो फिर धर्म कर्म कौन करेगा—इस लिये देह-धारियों को अपने शरोर की रक्षा के ऊपर विशेष ध्यान देना चाहिये।

मगवान् पाराशर ने भी गायत्री की आराधना और गायत्री मंत्र के जप को सब पापों के नाश का कारण बतलाया है। परा-

१ चत्वारो वा त्र्योवापि यद्द्वयुर्वेदपारगाः ।

स धर्म इति विज्ञेयो नेतरैस्तु सहस्रशः ॥

श्लो० १५ अ० ८,

२ येन केन च धर्मेण सृदुना दार्शन च ।

उद्दरेदीनमात्मान समर्थो धर्ममाचरेत् ॥

श्लो० ४२ अ० ७,

शर के बतलाये प्रायश्चित्त, पापी को आगे चल कर पाप करने से तो रोकते ही हैं पर उन प्रायश्चित्तों से दूसरे लोगों को भी उचित शिक्षा मिलती है। जैसे ब्रह्म-हत्या करने वाले की नगर नगर गाँव गाँव अपने पाप कर्म को चिह्ना कर, कहने की आज्ञा दी गयी है। प्राचीन समय के धर्म व्यवस्थापकों ने पापियों के लिये कठोर दण्ड इसो लिये नियत किये हैं, जिससे लोग पाप करने से डरे और पाप करने वालों की संख्या कम हो।

पाराशर मुनि ने परम-धर्म की बतलाते हुए लिखा है—

धर्मशास्त्ररथारुद्धा 'वेदखद्गधरा' 'द्विजाः'।

कीडार्थमपि 'यद्वृयुः' स 'धर्मः' परम् 'स्मृतः'॥

अर्थात् जो द्विज धर्मशास्त्र लिपी रथ पर सदा 'सवार हो कर और वेद रुपी खड़ग (तलवार) को हाथ में लिये रहता है— वह द्विज यदि हँसी दिल्लगी में भी कोई बात कहे, तो वह भी परम-धर्म माननी चाहिये।

पुराणों में पाराशर का जो परिचय दिया गया है वह यह है। पाराशर एक बड़े तपस्वी थे। वे वशिष्ठ जी के पौत्र थे। उनके पिता शक्ति को राक्षसों ने मार कर खा डाला था। अपने पिता के मारने वालों से बदला लेने के लिये, उन्होंने राक्षसों का विघ्वंस करने के निमित्त एक यज्ञ भी किया था। पर उनके बाबा ने उन्हें रोक दिया और समझाया कि उनके पिता की सृत्यु इसी तरह होनी लिखी थी।

। अहं दुष्कृत कर्मा वै महापातक कारकः ।

, गृह द्वारेषु तिष्ठामि भिक्षार्थी महापातकः ॥

पुलस्त्य जी ने उन्हें 'विष्णु-पुराण पढ़ाया था, जिसे उन्होंने पीछे से मैत्रेय को सुनाया । क्वचीसवें द्वापर में पाराशर ही व्यास थे और उन्होंने ऋग् और साम-वेद की एक शाखा अपने शिष्यों को सिखलायी थी ।

कलियुग में आपने यह स्मृति बनायी । इनकी स्मृति का उल्लेख याङ्गवलङ्ग-स्मृति में भी किया गया है । इनके नाम से एक तत्र ग्रन्थ और एक ज्योतिष ग्रन्थ भी प्रचलित है । इन दोनों ग्रन्थों के रचयिता इस स्मृति के कर्त्ता पाराशर ही हैं, या इस नाम के कोई दूसरे महात्मा—इसका निर्णय हम नहीं कर सकते ।

"बालकोपयोगी पुस्तकमाला" की यह नवीं पुस्तक है । हमें आशा है कि जिस तरह अभी तक हिन्दी जानने वालों ने, इस माला की, अन्य पुस्तकों को चाह से अपने बालक बालिकाओं को पढ़ाया है—उसी तरह इस पुस्तक को भी वे बालक बालिकाओं को पढ़ने के लिये देंगे ।

स्मरण रहे इस "पुस्तकमाला" की भूमिका और "ग्रन्थ-परिचय" बालक बालिकाओं के पिता माता और उनके अभिभावकों के लिये ही लिखे जाते हैं ।

प्रयागः  
पौष कृष्ण १४ सं० १६६७. }      चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा



## विषय-सूची

—१०—

१—पहिला अध्याय	.	६
२—दूसरा अध्याय	..	११
३—तीसरा अध्याय	... ...	१३
४—चौथा अध्याय	...	२१
५—पाँचवाँ अध्याय	...	२५
६—छठवाँ अध्याय	...	२६
७—सातवाँ अध्याय	.. ...	३८
८—आठवाँ अध्याय	.. .	४४
९—नवाँ अध्याय	.. .. .	५२
१०—दसवाँ अध्याय	... .. .	६२
११—यारहवाँ अध्याय	.	६४
१२—वारहवाँ अध्याय	... .	७१



# संक्षिप्त-पाराशर-सृति

## पहिला अध्याय

बहुत पुरानी बात है, एक दिन, हिमालय पहाड़ के ऊपर, देवदारु वन में, व्यास जी महाराज अपने आश्रम में एकाग्र-मन बैठे हुए थे।

उस समय उनसे ऋषियों ने पूँछा —

ऋषिगण—हे सत्यवती के पुत्र ! कृपा कर, यह बतलाइये कि कलि-युग में प्राणियों की भलाई किस धर्म, किस ग्राहार और कैसा शौच रखने से हो सकती है ?

प्रज्वलित भग्नि और सूर्य के समान तेज वाले, वेद तथा सृतियों के पूरे पण्डित श्री वेदव्यास जी ने ऋषियों से कहा —

श्री वेदव्यास—जब मैं स्वयं धर्म के तत्व को भली भाँति नहीं जानता, तब मैं धर्म की बात आप लोगों से कैसे कह

सकता हूँ । पर आप लोग यदि अपने प्रश्न का ठोक ठोक उत्तर चाहते हों तो मेरे पिता श्री पाराशरजी के पास जाइये । वे आपके प्रश्नों का ठोक ठोक उत्तर देंगे ।

धर्म के तत्व को जानने के लिये उत्सुक, ऋषि लोग, व्यास जी-को आगे कर, बदरिकाश्रम की ओर श्री पाराशर जी के पास चल दिये ।

पाराशर जी का आश्रम फलों और फूलों से सुशोभित था और आश्रम के चारों ओर तरह तरह के पेड़ लगे हुए थे । वह आश्रम नदी, झरने और पुण्य-दायी तीर्थों से भरा पूरा था । उसके इधर उधर हिरन धूम रहे थे और नाना प्रकार के पक्षी पेड़ों की डालियों पर बैठे हुए थे । आश्रम के पास ही अनेक देव-मन्दिर भी थे । यहाँ, गन्धर्व, सिद्धगण, चारों ओर नाच रहे थे और गा रहे थे । ऐसे रमणीक और सुन्दर आश्रम में शक्ति के पुत्र श्री पाराशर जी महाराज बड़े बड़े ऋषियों के बीच में सुखासन से बैठे थे ।

उसी समय व्यास जी भी सब ऋषियों का साथ लिये हुए उनके पास पहुँचे ।

प्रदक्षिणा और प्रणाम कर, व्यास जी ने श्री पाराशर मुनि की स्तुति की ।

इसके बाद महामुनि पाराशर जी ने प्रसन्न हो कर, उनसे कुशल मङ्गल पूँछा ।

इस पर व्यास जी और उनके साथ वाले ऋषियों ने कहा—  
“हम सब कुशल से हैं ।”

फिर व्यास जी ने अपने पिता श्री पाराशर जी महाराज से निवेदन किया —

व्यासजी—हे पिता ! यदि आप जानते हों कि आपके चरणों में मेरी कैसी भक्ति है और यदि आपका मेरे ऊपर स्नेह है, तो हे भक्त-बहसल पिता ! आप मुझे धर्म-उपदेश करिये । मैं आपका अनुगृहीत होऊँगा । मैं आप से मनु, वसिष्ठ, कश्यप, गर्ग, गौतम, उशना, अत्रि, विष्णु, सर्वत्त, दक्ष, अङ्गिरा, शातातप, हारीत, याज्ञ-वल्क्य, कात्यायन, प्रचेतस, आपस्तंब, शङ्ख आदि ऋषियों की बनायी हुई स्मृतियाँ पढ़ चुका हूँ । आपकी कही हुई कथाएँ मुझे ज्यों की त्यों याद हैं । पर ये स्मृतियाँ सतयुग, ब्रेता और द्वापर युग के लिये ही बनायी गयी हैं । जो धर्म सतयुग में थे, वे प्रायः सभी, कलियुग में नहु छोड़के हैं । इस लिये कृपा कर, चारों वर्णों का थोड़ा थोड़ा साधारण धर्म मुझे सुनाइये ।

व्यास जी की प्रार्थना पूरी होने पर, श्री पाराशर जी ने धर्म का स्थूल ( मोटा ) सूख्म ( पतला, मिहीन ) निर्णय, विस्तार से समझ कर कहना आरम्भ किया ।

पाराशर जी ने कहा—“हे वेटा व्यास ! और हे ऋषियो ! अब मैं तुम्हें धर्म की कथा सुनाता हूँ । आप लोग ध्यान दे कर उसे सुनिये ।

प्रलय के अन्त होने पर हर एक कल्प में नये सिरे से इस संसार ( दृष्टि ) की रचना की जाती है ।

उसी समय ब्रह्मा, विष्णु और महादेव, वैद, स्मृति और सदाचार का सदा निर्णय हुआ करता है ।

एक कल्प का अन्त होने पर, दूसरे कल्प के आरम्भ में कोई वेद का बनाने वाला नियत ( निर्दिष्ट ) नहीं किया जाता ।

चार सुँह वाले ब्रह्मा जी भूले हुए वेद को याद ( स्मरण ) करते हैं। इस लिये वेद के स्मरण-कर्ता कहलाते हैं।

ऐसा भी होता है कि किसी किसी कल्प के आरम्भ में, धर्म ( वेद ) को स्मरण करने का अधिकार मनु जी भी पाते हैं।

सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग में रहने वाले प्राणियों के धर्म-कर्म जुदे जुदे होते हैं।

सतयुग के लोगों का प्रधान धर्म तपस्या, त्रेता के लोगों के लिये प्रधान धर्म-ज्ञानी होना और ज्ञान प्राप्त करना, द्वापर के लोगों को 'यज्ञ' का करना उनका प्रधान धर्म-कार्य बतलाया है, पर कलियुग में केवल दान देने ही का प्रधान धर्म का कार्य बतलाया है। श्री पाराशर जी ने कहा; सतयुग में मनु की, त्रेता में गौतम की, द्वापर में शङ्ख की और कलियुग में, मेरी बनायी हुई सूति चलती है।

पापियों का ससर्ग बचाने के लिये सतयुग के लोगों को चाहिये कि वे उस देश को छोड़ दें जिसमें पापी रहते हैं और त्रेता में केवल वह गाँव छोड़ देना चाहिये जिसमें पापी बसते हैं और द्वापर में पापियों के कुल से किसी तरह का व्यवहार न रखना। चाहिये, पर कलियुग में केवल पापियों का साथ छोड़ना ही बहुत है।

सतयुग में पापी के साथ बात चीत करने से, त्रेता में पापी को देखने से, द्वापर में पापी का अज खाने से और कलियुग में मनुष्य अपने ही कर्मों से पापी होता है।

सतयुग में शाप का फल हाल के हाल, त्रेता में दस दिन के भीतर, द्वापर में एक महीने के भीतर और कलियुग में एक साल में मिलता है।

सतयुग में यदि दान देना हो तो दान देने वाले को दान लेने वाले के पास जाना चाहिये। ब्रेता में दान लेने वाले को बुला कर दान देना चाहिये। द्वापर में दान लेने वाला जब माँगने आवे, तब उसे दान देना चाहिये। कलियुग में दान उसे देना चाहिये, जो अपनी सेवा करता हो<sup>१</sup>।

दान लेने वाले के पास जा कर जो दान दिया जाता है, वह उच्चम, दान लेने वाले को बुला कर, दान देना मध्यम और माँगने वाले को दान देना 'अधम' कहलाता है। पर जो दान सेवा करने वाले को दिया जाता है, उस दान का कुछ भी फल नहीं होता। ऐसा दान निष्फल होता है।

मनुष्य का प्राण, सतयुग में हड्डी में रहता था। ब्रेता में मांस में आया, द्वापर में लोहू में पहुँचा और कलियुग में मनुष्यों का प्राण अन्न में जा टिका। अर्थात् सतयुग के मनुष्य बड़े बलवान होते थे, उनसे उत्तर कर ब्रेता में हुए, उनसे भी उत्तर कर, बल द्वापर वालों में रहा—पर कलियुग में लोग अति निर्वल पड़ गये। कलियुगी लोगों के महोने में दो एकादशी के उपवासों से प्राण निकल जाते हैं और सतयुग के लोग, सालों तक पवन पी कर, बिता दिया करते थे।

कलियुग का यह नियम समझना चाहिये कि अधर्म से धर्म, खूँठ से सच, नौकरी से राजा और लो ( पत्नी ) से पुरुष ( पति ) सदा हार जाया करते हैं।

कलियुग में अग्नि होत्री नहीं होते, लोग गुह तक को नहीं मानते और बहुत छोटी अवस्था ही में खियाँ बच्चों की मानाएँ हो जाती हैं।

<sup>१</sup> अभिगम्य कृते दानं । त्रेतास्यादूय दीयते ।

द्वापरे याचमानाय । सेवया दीयते कलौ ॥

जैसे युगों के धर्म जुदे जुदे हैं, वैसे ही जुदे जुदे युगों में ब्राह्मण भी जुदे जुदे धर्म के मानने वाले और भिन्न भिन्न आचरण करने वाले हुआ करते हैं। इस लिये सतयुग के ब्राह्मणों की त्रेता के ब्राह्मणों के साथ; अथवा सतयुग के ब्राह्मणों की कलियुग के ब्राह्मणों के साथ तुलना कर के—ब्राह्मणों की निन्दा न करनी चाहिये। क्योंकि जैसा युग होता है, वैसे ही ब्राह्मण भी होते हैं।

अन्य युगों में मनुष्यों की सामर्थ्य के विचार कर, अन्य ऋषियों ने प्रायश्चित्त बतलाये हैं। कलियुग में पाराशर जी के कहे हुए प्रायश्चित्त ही ठीक हैं। क्योंकि उन्होंने कलियुगी मनुष्य के शरीरों की शक्ति को भली भाँति विचार प्रायश्चित्त बतलाये हैं।

श्री पाराशर जी ने कहा—“आज मैं कलियुग के धर्मों को स्मरण करता हुआ, कलियुगी धर्म को कहता हूँ।

हे ऋषियो ! पहिले मैं आपको बारों वर्णों के आचार (अर्थात् करने योग्य काम और वर्तने योग्य नियम) बतलाता हूँ। आप लोग ध्यान से सुनिये। मैं जो अब कहता हूँ, वह पवित्र है, पुण्य का बढ़ाने वाला है और पाप का नाश करने वाला है।

कलियुग में मेरे कहे धर्मों के पालन करने से ब्राह्मणों का कल्याण होता है और धर्म की मर्यादा बनी रहती है।

मनुष्य के आचरण ही बारों वर्णों के धर्म की जड़ हैं। जिसके आचरण बुरे हैं, उससे धर्म सदा रुठा रहता है।

जो ब्राह्मण व्यक्ति कर्मों में लगे रहते हैं और जो नित्य भगवान की पूजा करते हैं, अभ्यागतों का सत्कार करते हैं और हवन कर के बचे हुए अन्न को भोजन करते हैं, उनको कलियुग में कभी दुःख नहीं मिलते।

१ नित्य सवेरे स्नान करना, २ प्रातःसायं-सन्ध्या करना, ३ जप करना, ४ होम करना, ५ वेद पढना, ६ भगवान का पूजन तथा वलिवैश्वदान—ये खः काम ब्राह्मणों को नित्य करने चाहिये।

मित्र हो अथवा शत्रु हो, पण्डित हो या मूर्ख हो, यदि कोई वलिवैश्व करने के समय आ जाय तो उसीको अतिथि समझ लेना चाहिये। उसीके सत्कार स्वर्ग मिलता है।

बहुत दूर से आये हुए और थके हुए मनुष्य को अतिथि मान कर, उसका सत्कार करना चाहिये। घर में ठहरे हुए मेहमान अतिथि नहीं हो सकते।

अतिथि से उसके गोत्र, आचरण और विद्या को योग्यता, के चारे में पूँछ पाँछ न करनी चाहिये। श्रद्धा-सहित अतिथि का सत्कार करना चाहिये। अतिथि को भगवान का खद्ग समझना चाहिये।

अपने या अपने घरबालों में से किसी के नानेदार घरेलू काम करने के लिये यदि आवें, तो उन्हें अनिथि नहीं समझना चाहिये। वे ब्राह्मण भी अतिथि नहीं हैं जो एक ही गांव या नगर में रहते हैं। जोकि अतिथि शब्द का अर्थ ही यह है कि जो नित्य न आते।

वलिवैश्व के समय यदि कोई भिखारी आ जाय, तो वैश्वदेव के निमित्त निकाले हुए अन्न से थोड़ा सा अन्न निकाल, मिथुक को दे कर विदा कर दे। यदि ब्रह्मचारी आ जाय, तो वैश्वदेव वाले अन्न में से ब्रह्मचारी को दे देना चाहिये। इस अन्न के दोनों ही अधिकारी हैं। इन दोनों को बिना दिये खय मोजन कर लेने से बान्द्रायण ब्रत करना चाहिये।

भिखारी को पहिले पानी दे, फिर अन्न दे और पीछे से उसे पानी फिर दे। इस तरह अन्न देने से दिया हुआ अन्न मेरु पहाड़ के बराबर और ज़ंल समुद्र के बराबर हो जाता है। अर्थात् जो पुण्य सुमेरु पर्वत के बराबर अन्न का दान करने से मिलता है और जो फल समुद्र जितना पानी देने से होता है, उतना पुण्य ऊपर कही हुई रीति से भिक्षुक को अन्न देने से होता है।

वैश्व-देव के दोषों को भिक्षुक मिटा सकते हैं। पर भिक्षुकों के दोषों का वैश्व-देव नहीं मेट सकते।

जो आदमी बलिवैश्व कि बिना भोजन कर लेता है, उसके लिये सारे अच्छे कर्म निष्फल हो जाते हैं। ऐसे लोगों का पाप लगता है, जिसका फल यह होता है कि मरने के बाद वे नरक में पड़ते हैं।

खाते समय सिर खुला रहना चाहिये। उस समय, टोपी, पगड़ी, मुड़ासा आदि कोई भी चीज़ न रहनी चाहिये। खाते समय दक्षिण की ओर मुख कर के भौंर बाँये पैर पर हाथ रख भोजन न करना चाहिये। जो ऐसा करते हैं, उनके किये हुए भोजन का फल राक्षसों का मिलता है।

संन्यासी को सोना, ब्रह्मचारी को पान न देना चाहिये और चौर की हिमायत और रक्षा कभी न करनी चाहिये। इस नियम के विरुद्ध चलने वाले नरक में गिरते हैं।

बलिवैश्व के समय कोई भी अतिथि आ जाय, चाहे वह पापी हो, चाहे वह चारेडाल (जल्लाद) हो, चाहे वह ब्रह्मघाती (आहंका का मारने वाला) अथवा बाप का मारने वाला ही किंतु न हो, उसका साकार करना चाहिये।

जिस घर से अतिथि हताश हो कर लौट जाते हैं, उस घर बाले के पुरुषे एक हज़ार वर्षों तक भूखों मरते हैं।

जो ब्राह्मण, वेद जानने वाले विद्वान् अतिथि को भोजन कराये बिना, भोजन कर लेता है—वह महापापी होता है।

ब्राह्मण का मुख काँटा और जल से रहित खेत है—इस खेत में जो बोज बोया जायगा, वह पेड़ हो। कर अच्छा फल देगा<sup>१</sup>।

सदा अच्छे खेत में बोज बोना चाहिये और सुपात्र को दान देना चाहिये। अच्छे खेत और सुपात्र में जो कुछ छोड़ा जाता है—वह व्यर्थ नहीं जाता है।

जिस नगर के ब्राह्मण भूठ बोलते हों, पढ़ते लिखते न हों, भीम माँग कर, पेट भरते हों, उस नगर में वसने वालों को राजा दण्ड (सज्जा) दे। क्योंकि घे लोग बुरे आदमियों का पालन-पोषण करते हैं। उनकी उदारता से पापियों की बढ़ती होती है।

क्षत्रियों का धर्म है कि वे प्रजा की रक्षा करें। शत्रुओं को जैसे बने वैसे नाश करें और प्रजा को पालें।

यह पृथिवी उसी की है जिसकी भुजाओं में बल है। जो बलवान् होता है वही पृथिवी को भोगता है<sup>२</sup>।

जैसे फूल-माला गूँथने के लिये वाटिका के फूल तोड़े जाते हैं; पेड़ उखाड़ कर, वाटिका उजाड़ी नहीं जाती—वैसे ही राजा प्रजा से उतना ही कर चसूल करे—जितने से प्रजा तो कर के बोझ से पिसे नहीं और सजाना भर जाय। राजा को प्रजा पर कहार्इ की आग वरसा कर, उसका जड़ से नाश कभी न करना चाहिये।

<sup>१</sup> ब्राह्मणस्य मुख्य क्षेत्र निरुदकमकण्टकम्।

वापयेत् सर्वदीजानि सा कृपिः सर्वकामिका ॥

<sup>२</sup> \* \* \* \* वीरभोग्या वसुन्धरा।

लुहारी, जड़ाई और सुनारो का काम, गौमों को पाल कर, उनके घी दूध को बेचना, तरह तरह के व्यापार करना और खेती बारी करना—ये कर्म वैश्यों के हैं।

ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य की सेवा करना, शूद्रों का काम है।

जिनके लिये जो कर्म ऊपर कह आये हैं, उनसे भिन्न कर्म करने वालों के सब कर्म निष्फल होते हैं।

निमक, शहद, तेल, दहो, मठा, घो और दूध—इन वस्तुओं को शूद्र भी बेच सकते हैं। इन वस्तुओं के बेचने से वे पापी नहीं हो सकते।

यदि शूद्र भी हो और वह मांस और मदिरा बेचता हो, अनखानी वस्तु खाता हो और लोटी चाल चलन का हो—तो वह शूद्र भी नरक में गिरता है।

जिस गङ्ग के सींग हिलते हों, उसे कपिला गौ कहते हैं। उसका दूध पीने से, ब्राह्मणी के साथ लोटा काम करने से और वेद के मत्रों का विचार करने से, शूद्र अवश्य नरक में गिरता है।



## दूसरा-अध्याय



**ज** पर कहे हुए क्षमो<sup>१</sup> कस्मौं का करने चाला ब्राह्मण  
जीविका के लिये खेतों कर सकता है।

हल को आठ बैलों से चलवाना उत्तम है; क्वैल लगाना  
मध्यम है; चार लगाना कसाईपन है और दो लगाना तो मानो  
बैलों की हत्या करना है।

भूखे प्यासे बैलों को हल में कभी नहीं जोतना चाहिये।

मङ्ग-हीन, रोगी और कमज़ोर बैल पर ब्राह्मण को कभी बोझ  
न लादना चाहिये।

जो बैल मोटे ताजे और मङ्गदूत हों उन्हीं से दोपहर तक हल  
चलवावे।

इसके बाद ब्राह्मण स्नान, जप, भगवान की पूजा, होम और  
वेद पढ़े। फिर शक्ति के अनुसार एक, दो, तीन अथवा चार वेद  
आजने धाले ब्राह्मणों को भोजन करावे।

खेत को जोत कर परिश्रम से धान बोवे। जब धान काटने  
योग्य हों, तब उन्हें काट कर उनसे पञ्च-महा-यज्ञ करे और उन  
धानों से श्रीरों को सहायता भी दे।

ब्राह्मणों को तिल और रस नहीं बेचने चाहिये। वे और नाज,  
भूसा और लकड़ी बेच सकते हैं।

---

१ साँतवाँ पृष्ठ देखो।

ब्राह्मण ये व्यापार करने से पापी नहीं होते ।

धीवर एक वर्ष में मछलियों का मार कर जो पाप बटोरता है, लोहे की तोक वाला हुल चलाने वाले को वे सारे पाप एक ही दिन में लग जाते हैं ।

जाल बिछा कर मछली अथवा पशु पक्षी पकड़ने वाले १ मछुआ, २ बहेजिया, ३ सूम, ४ हुल चलाने वाले और ५ व्याघ—ये पाँचों समान पापी हैं ।

१ ऊखल, २ शित-बद्धा, ३ चूल्हा, ४ पानी का घडा और ५ खादू,—इन पाँचों चीजों से गृहस्थों का पांच-हत्या नित्य लगती हैं ।

पेड़ काटने में और पृथिवी के गोड़ने में जो सैकड़ों कीड़ों के मारने का पाप खेतीहर को लगता है—वह पाप यज्ञ करने से दूर हो जाता है ।

खलिहान में अन्न के ढेर पर रहने वाला, यदि द्विजातियों के माँगने पर भी अन्न न दे, उसे चोरी करने और ब्राह्मण मारने का पाप लगता है ।

खेन में जितना अन्न उपजे, उसका छहाँ हिस्सा राजा को, इकोसवाँ हिस्सा देवताओं को और ब्राह्मण को तीसवाँ हिस्सा देने से खेती करने वाला पाप से छूट जाता है ।

क्षत्रिय भी खेती कर के ब्राह्मण और देवताओं की पूजा करे ।

वैश्य और शूद्र खेती, व्यापार पर्वं कारीगरी का काम सदा करे ।

ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य को सेवा न कर के, यदि शूद्र दूसरा काम करे, तो वह अल्पायु हो कर, नरक में गिरता है ।

चारों वर्णों के ये ही सनातन धर्म हैं ।

## तीसरा-अध्याय

व जन्म-शौच और मरण-शौच का विधान  
लिखते हैं।

किसी घर बाले या कुटुम्बी के मरने पर ब्राह्मण तीन दिन लों अशौच (अशुद्ध) रहता है। क्षत्रिय को बारह दिन, वैश्य को पन्द्रह दिन और शूद्र को एक महीना लों मरने का सूतक लगा रहता है।

उपासना करने से ब्राह्मणों की अङ्ग-शुद्धि होती है।

घर में अथवा कुटुम्ब में बालक उत्पन्न होने पर भी सूतक लगता है। इस सूतक में ब्राह्मण को छू सकते हैं।

जन्म के सूतक से ब्राह्मण बस दिन, क्षत्रिय बारह दिन, वैश्य पन्द्रह दिन और शूद्र एक महीने बाद शुद्ध होता है।

जो अश्चि-होत्री हैं और जो वेद को पढ़ते हैं—ऐसे ब्राह्मणों को केवल एक ही दिन का सूतक लगता है।

जो ब्राह्मण गुरु से वेद नहीं पढ़ते, किन्तु वेद के अर्थ का विचारा करते हैं—ऐसे ब्राह्मण को केवल तीन दिन के लिये सूतक लगता है।

जो ब्राह्मण न तो अग्नि-होत्र ही करते हैं और न गुरु से वेद ही पढ़ते हैं, उसको दस दिन तक सूतक लगा रहता है।

जो ब्राह्मण जन्म और कर्म दोनों से गये बीते हैं और जो ब्राह्मण सन्ध्योपासन, गायत्री का जप तथा तर्पण आदि नहीं करते ऐसे गये बीते, नामधारी ब्राह्मणों को भी दस ही दिन का सूतक लगता है।

एक घर में रहने वाले, एक ही पुरुषे के सन्तान, यदि जुरे हो कर अलग अलग रहने लगें, तो ऐसे ब्राह्मणों को भी दस दिन तक सूतक मानना चाहिये। एक पुरुषे के सन्तान को 'सपिण्ड' भी कह सकते हैं।

जिसको दस दिन का, मरने अथवा जन्म लेने का सूतक लगा है, उसका अन्न न खाना चाहिये।

सूतक के दिनों में दान का देना, दान का लेना, होम करना और वेद का पढ़ना मना है।

एक वंश में चार पीढ़ी तक, पूरा पूरा सूतक लगता है।

अपने वंश में पाँचवीं पीढ़ी में पहुँच कर दाय-भाग (बटवारे) का अधिकार जाता रहता है।

चार पीढ़ी तक दस दिन, पाँचवों पीढ़ी में छः दिन, छठवों पीढ़ी में चार दिन और सातवीं पीढ़ी में छः दिन का सूतक मानना चाहिये।

पाँच पीढ़ी के भीतर का समोन्त्री कुटुम्बी, आहु में भोजन नहीं कर सकता।

‘कृठवी पीढ़ी का और कृठवी पीढ़ी से उधर का सगोत्री श्राद्ध में भोजन कर सकता है।

छः पीढ़ी से उधर का कोई सगोत्री पातकी हो कर, आग में जल कर और परदेश में जा कर मर जाय, तो ऐसी मृत्यु होने पर, सूतक बाले तुरन्त शुद्ध हो जाते हैं।

यदि मरने के दस दिन बाद ऐसे मनुष्य के मरने का समाचार मिले, जिसका सूतक अपने को लग सकता है, तो सुनने के दिन से ले कर तीन दिन के भीतर शुद्ध हो जाती है।

यदि मरने के एक साल बाद किसी कुटुम्बी के मरने का समाचार मिले, तो सबस्त्र (जिन कपड़ों को पहिने हुए ऐसा समाचार सुने उन कपड़ों समेत) स्नान कर डालने से मनुष्य शुद्ध हो जाता है।

यदि कोई सगोत्री परदेश में मरे, तो उसके मरने का समाचार सुन कर, केवल स्नान करने ही से शुद्ध हो सकती है। इस दशा में तीन रात्रि का सूतक नहीं लगता।

सृत्यु के छः महीने बाद मरने का समाचार सुनने से आधे दिन का सूतक लगता है।

एक वर्ष के भीतर सुनने से एक दिन का सूतक और एक वर्ष बीत जाने पर सुनने से, तुरन्त शुद्ध हो जाती है।

यदि बालक जन्म लेते ही मर जाय या दींत निकलने के पहिले मर जाय, तो न तो उसकी दाह किया करनी चाहिये और न उसके मरने का सूतक ही लग सकता है।

अगर बालक गर्भ ही में मर जाय, या गर्भ गिर जाय, तो जितने दिनों बालक गर्भ में रहा है, या जितने दिनों का गर्भ गिरा है, उतने ही दिनों का छियों का सूतक लगता है।

चार महीने के भोतर यदि गर्भ गिर जाय, तो उसे 'गर्भ का गिरना कहते' हैं।

पाँचवे और छठे महीने में गर्भ गिरने से भी गर्भ-पात ही कहलाता है।

इसके बाद गर्भ नष्ट होने से प्रसव (जन्म) कहलाता है। इस दशा में दस दिन का सूतक मानना चाहिये।

ठीक समय पर यदि वालक उत्पन्न हो और जीवित रहे, तो नोन्न-मात्र की सूतक लगता है और यदि वालक मर जाय, तो केवल माता ही को जन्म सूतक लगता है।

सूर्य निकलने के पहिले यदि कोई मरे या जन्मे, या खीरजस्वला हो तो वह दिन भी दिनों की गिनती में गिन लिया जायगा।

दाँत निकलने और चूड़ाकरण संस्कार (मुण्डन) हो चुकने पर यदि वालक मर जाय, तो उस वालक का दाह कर्म करना चाहिये और उसका सूतक भी तीन दिन का होगा।

यदि वालक के दाँत न निकले हों और वह मर जाय, तो उसका सूतक नहीं लगता और यदि मुण्डन होने के पहिले मर जाय तो एक दिन का सूतक लगता है।

यदि यज्ञोपवीत होने के पहिले वालक मरे तो तीन दिन का सूतक लगता है और यज्ञोपवीत-संस्कार हो चुकने पर दस दिन का सूतक लगता है।

जन्म के बाद मुण्डन और अन्न-प्राशन (जूठा) के पहिले ही यदि कन्या मर जाय, तो उसके पिता के भाई बन्धु, मरने का समाचार सुनते ही तुरन्त शुह जाते हैं।

यदि कन्या, विवाह होने के पहिले मरे तो एक दिन का सूतक लगता है और विवाह होने के बाद मरे तो तीन दिन का सूतक लगता है।

जिस घर में ब्राह्मचारी हवन करते हों और किसी के साथ संसर्ग न रखते हों—उनको सूतक नहीं लगता।

ब्राह्मण के बल संसर्ग ( छुआ-छूत ) ही से दूषित होते हैं। उनके दूषित होने का दूसरा कोई कारण नहीं है।

संसर्ग-रहित होने से ब्राह्मणों को जन्म-सूतक और सूतक-सूतक नहीं लगता।

शिल्पी, कारीगर, वैद्य, नौकरानी, नौकर, नाई, श्रोत्रिय ब्राह्मण और राजा—ये सब भी तुरन्त ( स्त्यः ) शुद्ध हो जाते हैं।

साथ पढ़ने वाले, मंत्र द्वारा शुद्ध हुए, 'शशि होत्री ब्राह्मण, राजा और राजा जिसको बहुत चाहते हों—उनको जन्म का सूतक नहीं लगता।

मरने के लिये तयार, दान देने के लिये तयार और नैति-हार, समय पर शुद्ध हो सकते हैं।

यह में हवन करने वाला ब्राह्मण 'यदि सूतिका-गृह को न छुए, तो वह स्नान कर के शुद्ध हो सकता है।

प्रसूतिका-खो ( जड़ा ) दस दिन में शुद्ध होती है।

माता पिता तथा अन्य नातेदारों के मरने पर दस दिन का सूतक लगता है।

वालक के जन्म का सूतक केवल माता ही को लगता है। पिता केवल स्नान मात्र ही से शुद्ध हो जाता है।

ब्राह्मण चाहे भले ही छमो अङ्ग सहित वेद का जानने वाला हो, पर यदि वह सूतिका-गृह में अपनो खो को जा कर

झूले, तो उसे भी अवश्य सूतक लग जायगा। क्योंकि ब्राह्मणों का हृने ही से ( संसर्ग ) सूतक लगता है और किसी तरह नहीं।

इस लिये ब्राह्मण को चाहिये कि वह हुम्बो-हूत से बचा रहे।

विवाह, उत्सव तथा यज्ञादि में यदि किसी वस्तु के देने का संकल्प हो चुका हो और उस समय यदि सूतक लग जाय, तो संकल्प की हुई वस्तु दी जा सकती है। ऐसे दान में अशीच-दोष नहीं होता।

एक सूतक पूरा नहीं हो पाया, तब तक बीच ही में यदि दूसरा सूतक लग जाय तो पहिले दूसरे दिन बाले सूतक के अन्त होने ही से, पिछला सूतक भी हूट जाता है।

ब्राह्मण और कैदी जो गौ को बचाने के लिये मरे और जो रण-भूमि में मरे—उनका कंचल एक दिन का सूतक मानता चाहिये।

योगी और युह में सामने मरते बाले सूर्य-मण्डल को फोड़ कर परलोक को जाते हैं।

शत्रुओं से घिर कर, जो वीर-पुरुष धायल हो कर भी शत्रु की विनती न करता हुआ मरता है, वह उस लोक में जाता है, जहाँ जाने से पुण्य-फल का कभी नाश नहीं होता।

जो शूरवीर युह में मारे जाते हैं वे खर्ग में जा कर, सुख में भोगते हैं और जो जीतते हैं, उन्हें धन मिलता है।

यह शरीर पलक मारते नष्ट होता है, रण-क्षेत्र में पैर रख कर, शूरवीर इस शरीर की चिन्ता नहीं करते।

युद्ध में छिन्न मिन्न हो कर, जब सेनायें भागने लगें तब भी जो उनको रक्षा करता है—उसे यज्ञ करने का फल मिलता है।

संग्राम में भाला, तीर, तलवार आदि से जो धायल होते हैं, उनका यश देवताओं की कन्याएँ गाती हैं और उन पर वे मोहित हो जाती हैं।

‘रण-क्षेत्र में जो बीर धायल होते हैं—उनकी और देव-कन्या और नाग-कन्या यह कहती हुई दौड़ती हैं कि—“ये मेरे पति हों।”

रण-क्षेत्र में जिस बीर के माथे में धाव लगता है, उस धाव से जो लोहू वह कर मुँह में आता है—वह लोहू नहीं है। वह तो समर-यज्ञ का सोम रस है।

यज्ञ, तप और विद्या द्वारा ब्राह्मण मरने पर, जिस लोक में जाते हैं, धर्म-युद्ध में प्राण छोड़ने वाले बीर पुरुष भी मरने पर उसी लोक में पहुँचते हैं।

जो लोग उस ब्राह्मण की लोथ को, जो अनाथ है—जिसका कोई इस सलार में नहीं है, शमशान में ले जाते हैं; उन्हें बिना किये पद पद पर यज्ञ करने का फल प्राप्त होता है।

जो ब्राह्मण अपने गोत्र का नहीं है, अथवा अपना मित्र नहीं है, उसके शब्द को शमशान पहुँचाने पर, प्राणायाम करने से देह शुद्ध हो जाती है। ऐसा करने से ब्राह्मणों के शुभ कार्यों में किसी तरह को चुराई पैदा नहीं होती। कहा है जल में स्नान करने ही से वे शुद्ध हो जाते हैं।

अपने कुटुम्ब के हों अथवा बाहिरी हों, जाति वाले हों अथवा न हों, उनके सब के पीछे पीछे जाने पर, स्नान से, अग्नि के झूने से और धी के खाने से अन्त में लोग शुद्ध हो जाते हैं।

यदि ब्राह्मण अनजाने क्षमिय की लोधि के साथ जाय, तो उसे एक दिन का सूतक लगता है और पञ्चगव्य (गोवर, गोमूत्र, गोहुग्ध, गोधृत और गोदधि को मिजाने से पञ्चगव्य बनता है) पीने से वह शुद्ध होता है।

यदि ब्राह्मण किसी वैश्य के शब के साथ जाय, तो उसे तीन दिन का सूतक लगता है और प्राणायाम करने से वह शुद्ध होता है।

जो अल्पज्ञानी ब्राह्मण, शूद्र के मुद्दों को ढोवे तो भी उसे तीन दिन का सूतक लगता है।

तीन रात बीतने पर, ऐसे ब्राह्मण जा कर समुद्र-वाहिनी किसी नदी में स्नान कर के एक सै। बार प्राणायाम करें और घी खाँय।

धर्म जानने वालों का कहना है कि शूद्र लोग जब तक किसी जलाशय (नदी या तालाब) के किनारे लौट कर न हो आँखें, अर्थात् जब तक स्नान कर के वे शुद्ध न होले तब तक ब्राह्मण उन शूद्रों के साथ न जाय।

ब्राह्मण को शूद्र की लोधि का कूना और उसका जलाना मता है।

शूद्र की लोधि को यदि ब्राह्मण अपनी आँखों से देख ले, तो सूर्य के दर्शन कर के, वह शुद्ध हो जाता है। यहो पुरानी वाल है।

## चौथा-अध्याय

ति मान, अनि कोंध, अथवा भय से फाँसी लगा कर, जो छो अथवा मनुष्य प्राण-त्याग (आत्म-हत्या) करते हैं उनकी जो गति होती है, अब उसे कहते हैं।

फाँसी लगा कर आत्म-हत्या करने से जो व, पोव और लोहु से मरे और घने अन्धेरे में डुबेये जाते हैं और उसमें उन्हें साढ़, दशार वर्ष तक पड़े पड़े नरक भोगना पड़ता है।

जो छो अथवा मनुष्य फाँसी-लगा कर, मर जाता है, उसका अश्वि-संस्कार (दाह-किया) और जल से तर्पण नहीं करना चाहिये।

ऐसों का न तो सूतक मनाना चाहिये और न ऐसों के लिये रोना ही चाहिये।

प्रजापति भगवान की आङ्खा है कि जो फाँसी लगा कर, मरे हुओं के सूत शरीर को शमशान तक ले जाते हैं, जो ऐसों का अश्वि-संस्कार करते हैं और जो ऐसों के गले से फाँसी की रससी

खोलते हैं वे तसकुच्छु<sup>१</sup> नामी प्रायश्चित्त कर के शुद्ध होते हैं।

जिन्हें गौ अथवा ब्राह्मण ने मार डाला हो अथवा जो फाँसी लगा कर, मर गया हो, उसके शव को जो ब्राह्मण छूता है या जो उसे ढोता है और उसका अग्नि-संस्कार करता है, या उसके पीछे पीछे शमशान तक जाता है—वह तसकुच्छु व्रत और ब्राह्म-भोज करने से शुद्ध होता है। ऐसे लोगों का चाहिये कि वे वैल (साँड़) सहित गोदक्षिणा ब्राह्मण के दें। फिर तीन दिन गर्म जल, तीन दिन गर्म दूध और तीन दिन गर्म धी पीए तथा तीन दिन तक खायु पी कर रहें।

जो ब्राह्मण इच्छा न रहते भी पतितों के साथ भोजन करते हैं और उनके साथ व्यवहार रखते हैं—वे उनके साथ पांच दिन, दस दिन, बारह दिन, पन्द्रह दिन, एक महीना, दो महीना, छः महीना, एक साल या एक साल से अधिक सम्बन्ध रखने से आप भी पतित हो जाते हैं।

अगर एक पक्ष तक पतितों के साथ आहार व्यवहार करे तो तीन रात, दो पक्ष में कुच्छु-व्रत, तीन पक्ष में कुच्छु-सान्तपन व्रत, चार पक्ष में दश रात्रि-व्रत, पांच पक्ष में पराकरे-व्रत, छठवें पक्ष में चन्द्रायण-व्रत, सातवें पक्षवारे में दो चन्द्रायण-व्रत और आठवें पक्षवारे में छः महीने का कुच्छु-व्रत करना चाहिये।

इससे अधिक पक्ष लों पतितों के साथ खान पान करने से, जितने पक्ष पतितों के साथ खाय पिये उतनी ही सुहरे दान करे।

१ याज्वल्य-सूति अध्याय ३ क्षोक ३१८ में लिखा है कि तीन तीन दिन तक गर्म जल, दूध और धी पिये और तीन दिन लों गर्म हवा पी कर रहना 'तसकुच्छु' प्रायश्चित्त कहलाता है। २ "द्वादशाहोपवासेन पराक-परिकीर्तिः"

जो मनुष्य अपनो सती साध्वी ली को छोड़ बैठते हैं, उन्हें सात जन्म लों खो का जन्म धारण कर, बार बार विधवा हो कर, दुःख मोगना पड़ता है।

स्थामी यदि दृढ़द्र हो, बीमार रहता हो, या मूर्ख हो—यदि उसको खो उसका भनादर करे तो वह मरने पर साँपिन होती है और बारबार विधवा हुआ करती है।

पुत्र चार प्रकार के होते हैं। जैसे १ औरस, २ क्षेत्रज, ३ दत्तक और ४ कृतिम।

माता व पिता जिस पुत्र को दूसरे को दे देते हैं, उसका नाम दत्तक है।

जेठे भाई के अविवाहित रहते जो विवाह कर लेते हैं और अग्नि-होत्री वन जाते हैं उनको 'परिवेता' कहते हैं और अविवाहित ज्येष्ठ भाई को 'परिवित्ति' कहते हैं।

जो जेठे भाई के रहते छोटे भाई का विवाह करवा दें, तो छोटे भाई को दो कृच्छ्र, जिसका व्याह छोटे भाई के साथ हुआ हो—उस कन्या को एक कृच्छ्र, कन्या दाता को कृच्छ्रातिकृच्छ्र और विवाह करने वाले पुरोहित को चान्द्रायण-ब्रत करना चाहिये। तब वे सब शुद्ध होते हैं।

यदि जेठा भाई कुबड़ा, बैना, नपुंसक, पागल, मूढ़, जन्म का अन्धा, बहरा, गूँगा हो, तो उसके अविवाहित रहने पर भी यदि छोटे भाई का व्याह कर दिया जाय तो कोई प्राप नहीं।

यह नियम सभे भाईयों के लिये है। चचेरे अधवा और तरह के भाईयों के लिये नहीं।

शङ्ख मुनि का मत है कि यदि बड़ा भाई अपना विवाह न करना चाहे, तो छोटा भाई उसकी अनुमति ले कर, अपना विवाह कर सकता है।

जिस पुरुष के साथ किसी कन्या की सगाई हो गयी हो और वह सगाई होने के बाद त्यागी हो जाय अथवा उपुँसक हो जाय, या पतित हो जाय, तो ऐसी दशा में उस कन्या का दूसरे पुरुष के साथ विवाह हो सकता है।

पति के मर जाने पर, जो खी ब्रह्मचर्य से रहती है, वह मरने पर, जिस लोक में ब्रह्मचारी जाते हैं, उसी में जानी है।

पति के मरने पर, जो खी सती होती है, वह साढ़े तीन करोड़ (मनुष्य के शरीर में इतने ही रोगटे, हुआ करते हैं) वर्ष लों स्वर्ग में रहती है।

जैसे सपेरे बिल से साँप का जबरदस्ती खीच लेते हैं, वैसे ही अपने स्वामी के साथ मरी हुई खी, पति का जबरदस्ती खीच कर स्वर्ग में ले जाती है और अपने पति का उद्धार करती है।



## पाँचवाँ-अध्याय

दि किसी ब्राह्मण को, कुत्ता, भेड़िया, या गोदड़ य ( शृंगाल ) काट ले, तो उस ब्राह्मण को चाहिए कि वह स्नान करे और वेद-माता गायत्री का जप करे । ऐसे ब्राह्मण को गौ के सौग से पवित्र किये हुए जल से, या किसी महा-नदियों के सङ्कुम के जल से स्नान करना चाहिये और समुद्र के दर्शन करने चाहिये । ऐसा करने से वह ब्राह्मण शुद्ध हो जाता है ।

वेद अथवा किसी भी विद्या की या किसी वात की समाप्ति के बाद, यदि किसी ब्राह्मण को कुत्ता काट ले, तो वह ऐसे जल से स्नान करे, जिसमें सोने की केंद्र वस्तु छुला दी गई है । स्नान के बाद उसे घी भी खाना चाहिये । ऐसा करने से वह ब्राह्मण शुद्ध हो जाता है ।

‘यदि व्रत समाप्ति के पहिले ही ब्राह्मण को कुत्ता काट ले, तो व्रतधारी ब्राह्मण को तीन रात कड़ाका कर दिन में घी और कुप का पानी पी कर व्रत को पूरा करना चाहिये । व्रत को अंधूरा कभी न छोड़ना चाहिये ।’

ब्रत करने वाले या न करने वाले किसी प्रकार के ब्राह्मण के यदि कुत्ता काट ले, तो वह ब्राह्मण तीन ब्राह्मणों का प्रणाम करे और उन तीनों को अपना बाब दिखलावे। ऐसा करने से वह शुद्ध हो जायगा। अर्थात् उसे कुत्ते के काटने का असर न होगा।

यदि किसी का शरीर कुत्ता सुँघ ले, या काट ले, या पञ्चा मार दे, तो उस सुँधे हुए या काटे हुए या पञ्चा लगे हुए स्नान का पानो से भ्रो डाले या उस जगह का आग से जला दे। (आज कल कुत्ते की काटी हुई जगह कास्टिक से जलायी जाती है) ऐसा करने से शरीर शुद्ध हो जाता है।

यदि किसी ब्राह्मणी को कुत्ता या गोदड़ काट ले, तो वह चन्द्रमा या आकाश के अन्य तारों को देखने से शुद्ध हो जाती है।

अधिरे पाल्म में जब चन्द्रमा न दिखलायी पड़े, तब ज्योतिष के हिसाय से उस दिन जिस दिशा में उसको चाल पड़ती है— उस दिशा को देखने से ब्राह्मणी शुद्ध हो जाती है।

यदि ब्राह्मण को किसी ऐसे गाँव में कोई कुत्ता काटे, जिसमें दूसरा ब्राह्मण न मिले, तो वह स्नान कर के पीपल के पेड़ की परिकमा करने से तुरन्त शुद्ध हो जाता है।

यदि किसी अग्नि-होत्री ( सायिक ) ब्राह्मण को कोई गौ मार डाले, या किसी ब्राह्मण को कोई चाणडाल या राजा मार डाले या मारवा डाले, तो ऐसों के शव की दाह किया साधारण अग्नि से करनी चाहिये। अर्थात् ऐसों की लोथें मासूली अग्नि में जला देनी चाहिये। मत्र सद्वित, विधि पूर्वक ऐसों का अग्नि-संस्कार न होना चाहिये।

यदि कुटुम्ब के लोग ऐसे शब के उठा कर, शमशान तक ले जायं और उसका संस्कार करें तथा उसे छुएं, तो उन कुटुम्ब वालों को प्राजापत्य व्रत करना चाहिये।

फिर किसी ग्राहण की अनुमति ले कर, उस आदमी की लोथ को जलाने वाले अग्नि को दूध से बुझाना चाहिये। इसके बाद उस मनुष्य की हड्डियों को अग्नि-होत्र के अग्निसे, मंत्र पढ़ कर, जलाना चाहिये।

यदि कोई अग्नि-होत्री विदेश में मर जाय तो उसके शब को उसके अग्नि-होत्र के अग्नि से जलाना चाहिये।

## अग्नि-होत्री के शब की दाहनक्रिया की विधि

पहिले कुश और सृग्णीला विछावे। उन पर कुश की एक मनुष्य की आङ्गति ( शङ्क ) बना कर रखे।

फिर सात सौ पलाश नाम के पेढ़ को टहनियाँ लावे। इन सात सौ में से ४० टहनियाँ मरे हुए अग्नि-होत्री ग्राहण के शब के मस्तक पर रखे। साठ कण्ठ पर, सौ दोनों बाहों पर, दस दोनों हाथों पर, सौ छाती पर, तीस पेट पर, कमर के नीचे पीठ पर दोनों ओर आठ, आठ, टुड़ी के नीचे पाँच, दोनों जाड़ों पर इक्कीस इक्कीस, दोनों हुटनों और दोनों पिंडुलियों पर बीस बीस और दोनों पैरों को अङ्गुलियों के पास पबास पबास पलाश के पेढ़ की टहनियाँ और पलाश के पत्ते भी रखने चाहिये।

कमर के बीच दोनों ओर सभी का अरणो बना कर रख देने चाहिये। दहिने हाथ में श्रुता, धाये हाथ में उपसदु, कान में

अखल, पीठ पर मूसल, क्रातो पर पथर, मुँह में चावल और धी और तिल रख दे। फिर कान में 'प्रोक्षिणी' और दैनों आँखों पर आज्यस्तली (धी रखने का काठ का बना बर्तन) रख दे; कान, आँख, मुख, नाक में सोना डाल दे।

पीछे से मरे हुए अग्नि-होत्रि का देटा, भाई अथवा अन्य कोई, जो स्वधमर्मी हो—“असौ सर्गाय लोकाय साहा” मंत्र को पढ़ पढ़ कर, धी की भ्राहुति दे।

जो पण्डित है और जिन्हें इस कर्म-काण्ड का रहस्य (भेद) मालूम है, वे विधि के अनुसार कार्य करते हैं। क्योंकि विधि-पूर्वक अग्नि-संस्कार करने से मरे हुए अग्नि-होत्रि को परम-गति मिलती है। किन्तु जो लोग शाल की विधि को छोड़ कर, मन-मानो विधि से काम करते हैं, वे स्वयं अल्पायु, कम उम्र वाले होते हैं और मरने पर नरक में गिरते हैं।



## छठवाँ-अध्याय

ब आगे प्राणियों की हत्या से छुटकारा पाने का उपाय लिखा जाता है ।

हस, सारस, वगुला, चकई-चकदा, मुरगा, बतख और सामा को मारने वाले को एक रात्रि और एक दिन उपवास करना चाहिये । ऐसा करने से इन पक्षियों के मारने की हत्या छुट जाती है ।

बगुली, टिटिहरी, तोता, कबूतर, मुरगाबी और बगला की हत्या करने पर, दिन भर उपवास करे और रात में भोजन करे, तो हत्या के पाप से मनुष्य छुट जाता है ।

भास (एक प्रकार का मुरगा) कौआ, कबूतर, मैना और तीतरी को मारने वाला सुबह शाम जल में खड़ा हो कर, प्राणयाम करने से शुद्ध होता है ।

गीध, बाज, मोर, चकोर, चातक और उलू की हत्या करने वाला मनुष्य दिन में कच्चा अच्चा चूधा कर और रात्रि में हवा पी कर रहे तो शुद्ध होता है ।

दाढ़ुर, चातक, कोयल, खज्जन, लाखा, शुक को मारने वाला दिन में उपवास करे और रात को खाय, तो वह शुद्ध होता है ।

कारण्डव, चकोर, पिङ्गल, कुरा और भारद्वाज नाम के पक्षियों की हत्या करने वाला शिव की पूजा करने से शुद्ध होता है।

मेरुण्ड, स्येन, पारावत और कपिञ्जल नाम के पक्षियों को मारने वाले को दिन रात उपवास करना चाहिये। उपवास करने से वह हत्या से छुट जाता है।

न्योला, बिलाव, साँप, अजगर-साँप, गैँड़ा-साँप और कृशा को हत्या करने वाला लोहा दान करे और ब्राह्मण को तिल खिलावे तो वह हत्या से छुट जाता है।

साहिल, खरगोश, गोह, मछली और कछुआ के प्राण लेने पर चौबीस घण्टे बैंगन खा कर रहे तो हत्या से छुटे।

भेड़िया, स्यार, भालू और तेंदुआ को मारने वाला ब्राह्मण, तीन दिन तक हवा पी कर और तिल दान करने से शुद्ध होता है।

हाथी, बनेला बैल, घोड़ा, भैंसा और ऊँट के मारने वाले को सात रात्रि उपवास करना चाहिये फिर ब्राह्मण को सन्तुष्ट करने से हत्यारा शुद्ध हो जाता है।

मृगा, रुद्धमृगा और शूकर (सुब्र) का मारने वाला मनुष्य, हस्त से विना जेती हुई, जगह में उपजे हुए नाज को खा कर, चौबीस घण्टे रहे तो वह शुद्ध हो सकता है।

जो कोई कारोगर, कारु (कलपुर्ज बनाने वाला) शूद्र और खो की हत्या करे, उसे दो प्राजापत्य व्रत न्यारह वृष (बैल) दान करने चाहिये। तब वह शुद्ध होता है।

विना अपराध ही क्षत्रिय, या वैश्य की हत्या करने से दो अतिकृच्छ्र व्रत कर के दीस गोदान करने से पातक छुटता है।

यज्ञ करते हुए वैश्य और शूद्र को और क्रिया-हीन ब्राह्मण के मारने पर, चाण्डाल व्रत करने से और तीस गौ दान देने से हत्या शुद्धी है।

यदि ज्ञानिय, वैश्य या शूद्र अथवा और कोई जाति वाला, चाण्डाल को मार डाले तो वह आधा कृच्छ्र व्रत कर के शुद्ध हो सकता है।

यदि ब्राह्मण किसी चोर या भड़ी को मार डाले तो वह चौबीस घण्टे उपवास कर के और प्राणार्थाम करने से शुद्ध हो जाता है।

यदि कोई ब्राह्मण चाण्डाल, अथवा भड़ी के साथ बात चीत करे, तो वह ब्राह्मण अन्य ब्राह्मण के साथ बात चीत करने से और गायत्री जपने से शुद्ध हो जाता है।

चाण्डाल के साथ एक विस्तर पर सोने से, ब्राह्मण तीन रात उपवास करने से शुद्ध हो जाते हैं।

यदि ब्राह्मण चाण्डाल के साथ रास्ते में चले, तो गायत्री का स्मरण करने से वह पवित्र हो जाता है।

ब्राह्मण यदि चाण्डाल को देख ले तो शुद्ध होने के लिये उसे सूर्य का दर्शन करना चाहिये।

यदि चाण्डाल को ब्राह्मण या ज्ञानिय, वैश्य या शूद्र झूले, तो उसे कपड़ों सहित स्नान करना चाहिये।

यदि कोई ब्राह्मण चाण्डाल की गढ़दया का अनज्ञाने पानी पी ले, तो वह एक रात और पक्ष दिन-रात उपवास करने से शुद्ध हो सकता है।

जिस कुप में चाण्डाल का धड़ा पड़ता हो, उस कुप के जल को पीने वाले ब्राह्मण को तीन रात गो-मूत्र पी कर और जौ खा कर रहना चाहिये । ऐसा करने से वह शुद्ध होता है ।

यदि कोई ब्राह्मण किसी चाण्डाल के बर्तन में अनजाने जल धी ले और यह बात उसी समय जान पड़ने पर, भट्ट बमन ( उल्टी ) कर डाले; तो वह प्राजापत्य व्रत करने से शुद्ध हो जाता है ।

और यदि पिये हुए पानी को न निकाल डाले और उसे पचा जाय, तो उसकी शुद्धि केवल प्राजापत्य व्रत ही से न होगी, बल्कि उसे कुच्छुसान्त्वयन व्रत भी करना होगा ।

जिस प्रायश्चित्त में ब्राह्मण को सान्त्वयन व्रत करने की आवश्यकता है, उसमें क्षत्रिय केवल प्राजापत्य करे, वैश्य को आधा और शूद्र को चौथा हिस्सा प्राजापत्य व्रत का करना चाहिये ।

यदि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र भूल से अन्त्यज ( जो कई पीढ़ी से संस्कार स्मृष्ट चले आते हैं ) जाति के बर्तन में जल, दही या दूध आ पी लें, तो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का, उपवास कर के ब्रह्मकुर्च व्रत करने से, पातक दूर होता है ।

शूद्र केवल उपवास करके यथा-शक्ति दान करे तो वह शुद्ध हो जाता है ।

यदि ब्राह्मण अनजाने चाण्डाल का अन्न खा ले, तो दस रात्रि केवल गो-मूत्र और जौ खाने से शुद्ध होता है ।

इन दस दिनों में नित्य गो-मूत्र और जौ का एक ही एक कौर खा कर, व्रत पूरा करना चाहिये ।

यदि किसी ब्राह्मण के घर में कोई चाण्डाल रहता हो और घरवालों की यह बात न मालूम हो तो ब्राह्मण उपसंन्यास

( इसको विधि आगे दी गयी है ) कर के उसका पाप छुटा देंगे ।

## उपन्सन्यास का विधान

धर्म जानने वाले ब्राह्मणों के साथ दहो, घो और दूध में तिल मिला कर खाय और दिन में तीन बार स्नान करे । फिर तीन दिन दूध के साथ, तीन दिन दहो के साथ और तीन दिन घो के साथ गो-मूत्र में सने हुए तिलों को मिला कर खाय । बुरे और सड़े अन्न को न खाय । दहो और दूध तीन पल ( एक तरह का नाप ) और घो एक पल भर खाय ।

जिस अन्न को देख कर, मन बिगड़े, जिस अन्न में कीड़े पड़ गये हों और जो जूँठा हो उसे न खाना चाहिये ।

घर के ताँबे और काँसे के बत्तन राख से मलने से शुद्ध हो जाते हैं । कपड़ा धोने से शुद्ध होता है ।

मिट्टी के बत्तन एक बार काम में लाने पर, फिर दूसरी बेर काम योग्य नहीं रहते । उन्हें छोड़ देना चाहिये ।

घर की सब वस्तुओं को शुद्ध कर के, घर के द्वार पर केसर, गुड़, कपास, नीम, तेल, घो और अन्न रख, आग लगा कर घर को जला दे ।

जब ये सब शुद्ध हो जाय, तब उस घर में ब्रह्म-मोज करावे । फिर ब्राह्मण को तोस गौ और एक वैल दान करे ।

उस स्थान को लोप पोत कर हवन और जप करावे । तब वह घर शुद्ध होगा । क्योंकि ब्राह्मण जहाँ बैठ जाते हैं, उस जगह कोई पाप नहीं रह जाता ।

इसीका नाम 'उप-संत्यास' है।

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के घर में अनजाने यदि धोबिन, चमारिन आदि अन्त्यज आजाय और पीछे मालूम हो, तो ऊपर कही हुई शुहृ में जो विधान बतलाया गया है—उसका आधा करना चाहिये। केवल घर नहीं जलाना चाहिये।

यदि किसी के घर में चाणडाल चला जाय, तो उस घर की सभी चीज़ों को निकाल कर फेंक दे। पर जिन वर्तनों में, घी, तेल आदि रस-द्रव्य हों—उनका न फेंकना चाहिये।

इन वर्तनों को पानी में दही मिला कर, भीतर बाहर धो डाले।

यदि किसी ब्राह्मण के घाव में कीड़े पड़ जाय—तो उसका यह प्रायश्चित्त है।

उस ब्राह्मण को नीत दिन तक—नित्य दही, दूध, घी, गो-मूत्र और गोवर से स्नान करावे और उन्ही पाँचों चीज़ों को पिलावे। ऐसा करने से कीड़े पड़ने से अशुद्ध हुआ ब्राह्मण शुद्ध हो जाता है।

यदि क्षत्रिय के घाव में कीड़े पड़े हों, तो उसे पाँच माशे सोना दान करना चाहिये। यदि वैश्य हो तो वह एक गो-दान करे और एक दिन उपवास करे।

यदि शूद्र हो तो उपवास करने की कोई ज़रूरत नहीं है। शूद्र पञ्च-गव्य पीने, ब्राह्मण को नमस्कार करने और दान देने से शुद्ध हो जाता है।

यदि ब्राह्मण को शूद्र नमस्कार<sup>१</sup> करे तो ब्राह्मण कहे—“अच्छद्रमस्तु”; यह वाक्य पृथिवी के देखता मात्र का प्रसन्न कर देता है।

ब्राह्मण को नमस्कार करने पर वह जो आशोर्वाद दे, उसे माथे चढ़ाना चाहिये। ऐसा करने से नमस्कार करने वाले को ‘ग्रन्थिष्टोम’ यज्ञ करने का फल मिलता है।

यदि शूद्र किसी व्याधि से पोड़ित हो, तो उसे उपवास, ब्रत और होम ब्राह्मण से करवाना चाहिये, या ब्राह्मण देवता प्रसन्न हो कर, आप ही उसके सभी कामों को कर दें।

ब्राह्मण का आशोर्वाद लेने से सब धर्मों का फल मिलता है।

दुर्बल, चालक और बूढ़ों पर, दया करना ब्राह्मणों का परम कर्तव्य है। इनको छोड़ कर औरतों पर अनुग्रह करने से ब्राह्मण दोष का भागी होता है।

जो ब्राह्मण, ममता, लोभ, भय या अनजाने कुपात्र पर दया करता है, तो कुपा के योग्य पात्रों का सारा पाप; उस ब्राह्मण के सिर पर बा बैठता है।

जो ब्राह्मण हट्टे कट्टे पुरुष को तियमानुसार चलने की मनाई करते हैं, या जो ऐसे लेगों के बजाय, उनकी ओर से आप तियम पालन करते हैं, या जो ऐसा करने की विधि बतलाते हैं—वे ब्राह्मण नरक में पड़ते हैं।

१ जो समाज अपने के वैदिक और प्राचीन धर्मानुयायी मानता है, उसे देखना चाहिये कि इस स्मृति में भी सब वर्णों के लिये आपस में अभिवादन का विधान अलग अलग रखा गया है। कोई वर्ण हो—आपस में ‘नमस्ते’ की प्रथा शाखा-विरुद्ध है और जो सनातन वैदिक-मत को मानने-वाले हैं, उन्हें इस निषिद्ध प्रथा गर कभी न चलना चाहिये।

जो लोग ब्राह्मण का अपमान करते हैं, वे व्रत और नियम को पालन करने के योग्य पात्र नहीं हैं। उनका उपवास करना निष्फल होना है। उनको इन अच्छे कर्मों का कुछ भी फल नहीं मिलेता।

ब्राह्मण जिस काम को करने का जो विधान बतलावें, और वर्णों को उसी तरह करना चाहिये।

जो लोग ब्राह्मण का कहा नहीं मानते, उनको ब्राह्मण मारे का पाप लगता है।

जो लोग आप असमर्थ होने पर, उपवास, व्रत, स्नान, तीर्थ-दर्शन, जप और तपस्या, ब्राह्मण से करवाते हैं, उनके भी सब काम सफल होते हैं।

ब्राह्मण द्वारा कराये हुए शुभ कामों में व्रत-छिद्र ( व्रतों के दोष ) तप-छिद्र ( तपस्या के दोष ) और यज्ञ-छिद्र ( यज्ञ सम्बन्धी कार्यों की भूल चूक ) नहीं रहते। ब्राह्मणों के किये हुए ऐसे काम दोष-रहित होते हैं और करने वाले को उनका फल भी मिलता है।

ब्राह्मण देवता उन तीर्थों में हैं जो उनके मानने वालों की सब मनोकामना पूरी करते हैं। उनके वचन रूपी जल ही से पापी आदमी पवित्र होते हैं।

ब्राह्मण के मुख से जो वाक्य निकलता है वह 'देव-वाक्य' है। ब्राह्मण सर्व-देव-मय है। उनका वचन कभी ख़ाली नहीं जाता।

ब्राह्मण यदि भोजन करते समय पैर पर हाथ रख कर भोजन करे, तो वह जूठन खाता है।

किसी के जूठे बर्तन में खाना भी जूठन खाना ही है।

जूने या घडाऊँ पहिन कर और विश्वानों पर ट्रैंड कर भी न खाना चाहिये ।

यदि भोजन करने को मामत्री का कुचा या चापडाल देख ले, तो उस अन्न का छोड़ दे । उसे न खाना चाहिये ।

‘जिस अन्न की कौमा और कुचा जूठा कर दे ब्रथवा गै या गधा उसे सुंघ ले और वह अन्न थोड़ा हो, तो उसे काम में न ला कर छोड़ देना चाहिये ।

यदि अन्न अधिक हो तो उस सारे अन्न को न फैके, बल्कि जिन जगह कौप और कुचे ने मुँह डाला हो, वहाँ का थोड़ा सा अन्न निकाल डाले । वचे हुए अन्न को सोने से छुए हुए जल के छोटे से शुद्ध कर, आग से गर्म कर डाले ।

अग्नि और सोने के जल से क्लिङ्का हुआ और ब्राह्मण के मुख से निकले हुए वेद मंत्रों से पवित्र किया हुआ अन्न, उसी दम खाने योग्य हो जाता है ।



## सतिवाँ-अध्याय

का ठ का वर्तन ऊपर से क्षील देने ही से शुद्ध हो जाता है।

यज्ञ में व्यवहार ( इस्तेमाल ) किये हुए वर्तन, केवल हाथ से पौछ देने ही से शुद्ध हो जाते हैं ।

चमस ( वह वर्तन जिसमें डाल कर, यज्ञ करने वाले सोम रस पीते हैं ) और ग्रह ( वाज़ार से मौल ली हुई वस्तु ) केवल धोने ही से शुद्ध हो जाते हैं ।

चरु और श्रुद्धा आदि यज्ञ करने के वर्तन गर्म जल से धो डालने से शुद्ध होते हैं ।

कर्णि' के और तर्वि के वर्तन राख और खटाई से मल देने से शुद्ध होते हैं ।

नदी के किनारे, नदी की धारा से पवित्र होते हैं ।

खी यदि खोटो न हो तो वह मासिक-धर्म ( रजस्ला ) से शुद्ध होती है ।

यदि किसी बाबली, कुम्रा और तालब का पानी दूषित हो गया है तो उनमें का सौ घड़ा जल निकाल डालने से और वचे हुए जल में पञ्चगव्य छोड़ देने से उनका जल शुद्ध हो जाता है।

आठ वर्ष की लड़की गैरी, नौ वर्ष की लड़की राहिणी और दस वर्ष की लड़कों रजस्वला कहलाती है<sup>१</sup>।

कन्या का उप्र वारह वर्ष को हो जाय और तब तक उसका विवाह न कर दिया जाय, तो उसके पिता के पुरखे \* \* \* नरक में पड़ते हैं।

बिना व्याहो कन्या को रजस्वला देखने से, कन्या के पिता माता और घड़े भाई नरक में पड़ते हैं।

जो ब्राह्मण अनज्ञाने ऐसी कन्या के साथ व्याह करता है, उसे वही पाप लगता है जो शूद्र स्त्री के पनि बनने से ब्राह्मण को लगा करता है। ७

ऐसे ब्राह्मण के साथ एक पक्षि में बैठ कर न तो कोई भोजन करे और न उसके साथ किसी को बात चीत ही करनी चाहिये।

जो ब्राह्मण शूद्र-नारी के साथ एक रात भी, एक साथ और एक विस्तरे पर रहे, उसे तीन साल तक भीज माँग कर, अन्न खाना चाहिये। ऐसे ब्राह्मण को गायत्री का जप भी करना चाहिये। ऐसा करने से वह शुद्ध होता है।

सूत्य के अस्त्र होने पर, यदि कोई ब्राह्मण चाण्डाल, पतिन, या सूनिका (जचा) स्त्री को छूले, तो उसे अग्नि, सौना और चन्द्रमा के दर्शन कर के किसी ब्राह्मण के पोछे पीछे थोड़ो दूर जाना चाहिये। फिर वह स्नान करे। तब वह शुद्ध होता है।

---

<sup>१</sup> इस इलाके को बहुत से लोग जीववैध से दैख कर प० काशीनाथ का रचा हुआ बतलाया करते हैं, किन्तु असल में यह इलोक स्मृति का है।

यदि दो ब्राह्मण कन्या, रजस्वला होने पर, एक दूसरे की छूलें तो दोनों को तीन रात्रि निराहार रहना चाहिये। तीन रात्रि निराहार रहने से वे शुद्ध होती हैं।

यदि ब्राह्मण को कन्या ऊपर/कही हुई अवस्था में किसी द्वितीय को कन्या को छूले, तो ब्राह्मण की कन्या आधा कृच्छ्र और द्वितीय-कन्या चौथाई कृच्छ्र व्रत करने से शुद्ध होती है।

इसी तरह यदि ब्राह्मणी और शूद्रा आपस में एक दूसरे से छू जावें, तो ब्राह्मणी पूरा कृच्छ्र व्रत करने से और शूद्रा केवल दान देने से शुद्ध हो जाती है।

रजस्वला स्त्री चौथे दिन स्नान करने से शुद्ध होती है।

जिस स्त्री को रजस्वला होने की बीमारी हो वह नित्य रजस्वला होने पर भी अपवित्र नहीं समझी जाती है।

रजस्वला स्त्री पहिले दिन चाण्डाली, दूसरे दिन, ब्रह्म-हत्या दोष बाली, तीसरे दिन धोयित के समान अपवित्र होती है। ऐसी स्त्री चौथे दिन पवित्र होती है।

यदि किसी ब्राह्मण को कुना छू ले, या जूठे मुँह कोई शूद्र उसे छू ले, तो शुद्ध होने के लिये, उसे एक रात उपवास कर के पञ्चग्रन्थ पीना चाहिये।

शूद्र यदि जूठे मुँह न हो और ब्राह्मण को छू ले, तो ब्राह्मण स्नान करने से शुद्ध हो जाता है। किन्तु यदि शूद्र जूठे मुँह ब्राह्मण को छू ले, तो ब्राह्मण को प्राजापत्य व्रत करना होगा।

जिस काँसे के बतेन में मदिरा रखी हो—वह आग में तपाने से शुद्ध होता है।

‘काँसे के बर्तन को यदि गौ सुँघ ले अथवा उसमें कुत्ता या कौबा मुँह डाल दे तो उसे दस वेर, ज्ञार से मतने पर, उस बर्तन की शुद्धि होती है।

जिस काँसे के बर्तन में किसी ने कुलला कर दिया हो, या ऐर धोय हों, उसको छः महीने लौं जमीन में गाड़ देने से शुद्धि होती है।

लोहे के बर्तन एक जगह से उठा कर, दूसरी जगह रख देने ही से शुद्ध हो जाने हैं।

शीशे के बत्तेमों को आग से छुला देने से, वे शुद्ध हो जाते हैं।

दाँत, हड्डो, सीग, चाँदी, सोना, मणि और पत्थर के बर्तन जल में धोने ही से शुद्ध हो जाते हैं।

अब मल कर, साफ कर देने ही से शुद्ध हो जाता है।

बहुत सा अन्न, या बहुत से कपड़े यदि अशुद्ध हो जाय, तो उन पर जल का छीटा देने से वे शुद्ध हो जाते हैं।

अगर नाज या कपड़े धोड़े हों तो उन्हें धो डालना चाहिये।

बाँस के बने अन्न, बहुकल, सूती, ऊंती और रेशमी कपड़े जल से धो डालने पर शुद्ध हो जाते हैं।

तोशक, तकिया, आदि लाल और पीले रङ्ग के कपड़े धूप में सुखा कर, धो इनै ही से शुद्ध हो जाते हैं।

मूँझ, भाङ्ग, सूप, और अन्न पर धार रखने का एहिया, चमड़ा, तुण, काठ आदि और वैधने का रस्सा—ये सब पदार्थ जल से धो डालने पर शुद्ध हो जाते हैं।

विह्नी, मक्खी, कीट, पतङ्ग, सूँड़ी और मेड़क, सदा पवित्र और अपवित्र वस्तुओं को छुआ करते हैं। इनके हूने से कोई वस्तु अपवित्र नहीं होती। यह बात मनु भगवान् ने भी मानी है।

' जो जल ज़मीन से हूँ कर वहा हो और जो पानी दूसरे पानी में जा मिला हो, वह जल यदि किसी का जूठा भी हो, तब भी वह शुद्ध ही गिना जायगा ।

पान, ईख, ऐसा फल, जिससे तेल निकले ; ( बादाम आदि ) मधुपक्ष और सोमरस, ये सब उच्चिष्ठ ( जूठे ) नहीं होते ।

रास्ते की कीचड़, जल नौका, तृण और पको हुई ईटें—हवा और धूप के लगने से शुद्ध हो जाती हैं।

वायु से उड़ी हुई धूज और हवा से फैली हुई जल की धार अपवित्र नहीं होती ।

छोंकने, थूकने अथवा किसी अङ्ग में हाथ लग जाने, या अन-जाने कोई भूठो बात कहने पर, या किसी पतित के साथ बात चीत करने पर, दहिना कान हूँ लेना चाहिये ।

इसका कारण यह है कि अश्वि, जल, वेद, इन्द्र, सूर्य और वायु ब्राह्मण के दहिने कान में सदा वसा करते हैं ।

मनु जी ने कहा है कि प्रभात आदि नोर्थ और गङ्गा आदि पवित्र नदियाँ ब्राह्मणों के दहिने कान के पास सदा हो रहती हैं ।

देश में गडवड़ी होने पर, अकाल पड़ने पर, विदेश में या शरीर के किसी अङ्ग में पीड़ा होने पर, विपत्ति पड़ने पर, मनुष्य

को चाहिये कि पहिले अपनी देह की रक्षा कर ले । पीछे कोई काम करे ।

विषत्ति पड़ने पर, कहाँ के साथ या दीन बन कर—जैसे वह वैसे इस दीन आत्मा का उदार करे । पीछे जब समर्थ हो, तब धर्म का अनुष्ठान कर ले ।

जिस समय विषत्ति आवे, उस समय शौचाचार पर ध्यान न दे । विषत्ति में सब से पहिले अपने आत्मा की रक्षा करनी चाहिये । सबसे हो जाने के बाद, धर्म का अनुष्ठान कर लेने से काम चल जाता है ।



१ देशभूमि प्रकासे वा व्याधिषु व्यसनेवायि ।

रथे देव स्वदेहादि पश्चाद्धर्म समाधरेत् ॥

अ० ७ श्लोक ४।

## आठवाँ-अध्याय

गर वंधे वंधे या जौतने में बैल मर जाय, तो अ बैल के मालिक को चाहिये कि वह ब्राह्मणों की पञ्चायत के सामने जाकर, अपने मन का सन्देह मिटा ले ।

यदि पापी ने पाप किया हो और यह बात उसे जंच जाय, तो उसे पञ्चायत में जाने के पहिले भोजन कभी न करना चाहिये । यदि वह ऐना करे तो उसका पाप दूना बढ़ जाता है ।

“मैंने पाप किया है” यदि किसी के इस तरह का सन्देह उत्पन्न हो, तो जब तक पाप करने न करने की बात तय न हो जाय, तब तक उसे भोजन न करना चाहिये ।

ऐसे आदमी को भूल में पड़ कर, यह न मान लेना चाहिये कि मुझसे यह पाप नहीं था । क्योंकि भ्रम से किसी बात का सिंहान्त नहीं हो सकता ।

पाप कर के उसे किसी तरह छिपाना ठीक नहीं । क्योंकि पाप छिपाने वाले का पाप बढ़ता है ।

चाहे पाप भारी हो, चाहे हलका, पाप करने वाले को—  
अपना पाप-कर्म धर्म जानने वालों को अवश्य जतला देना  
चाहिये ।

जैसे चतुर वैद्य, रोगी का रोग दूर कर देते हैं, वैसे ही धर्म  
जानने वाले, पापी के पाप को दूर करने का उपाय बतला देते  
हैं । फिर प्रायश्चित्त करने से लज्जाशील ( शर्मदार ) सत्य में  
निष्ठा रखने वाला और सरल सभाव वाला व्यक्ति तुरन्त प्रायश्चित्त  
से गुह हो जाता है ।

क्षत्रिय अथवा वैश्य, यदि कोई ऐसी जगह पाप करे, जहाँ  
प्रायश्चित्त बतलाने वाले हों, तो उन्हें भट्ट स्नान कर के, भींगे  
कपड़े पहिने हुए ही चुपचाप प्रायश्चित्त बतलाने वालों के पास  
चला जाना चाहिये ।

प्रायश्चित्त बतलाने वालों को जहाँ सभा लगती हो, वहाँ  
पहुँच कर पापी को धरती पर पसर कर सापाङ्ग ( प्रणाम )  
करनी चाहिये । पापी सभा-गृह के सामने पढ़ा रहे और कुछ  
कहे सुने नहीं ।

जिन ब्राह्मणों ने न तो वेद पढ़ा, न गायत्री तथा सावित्री  
जानी, न सन्ध्योपासन ही सीखा और न अग्नि में हवन ही  
किया, किन्तु जो सदा खेती बारी में लगे रहे हैं—वे केवल नाम  
भर के ब्राह्मण हैं ।

ब्रत न रहने वाले और जप न करने वाले—केवल ब्राह्मणी  
वृत्ति से पेट भरने वाले ब्राह्मण अगर एक हजार भी मिल वैठें,  
तो भी वह धर्म सभा या परिषद् नहीं कहो जा सकती ।

ज्ञान से कंठे, धर्म को न जानने वाले ब्राह्मण जो कहते हैं  
और उनके इस अनर्थ से जो पाप होता है, वह सारा पाप उन

लोगों के मर्थे चढ़ता है जो ऐसे मूर्खों के 'हने' को कहते फिरने हैं, या प्रचार करते करते हैं।

धर्म-शास्त्र का मर्म जाने विना जा ब्राह्मण किसी पापों का प्रायश्चित्त की व्यवस्था देता है, तो उस व्यवस्था (बतलायी हुई विधि) से उस पापी का पाप तो दूर हो जाता है, किन्तु उसका सारा पाप व्यवस्था देने वालों के सिर पर आ बैठता है।

वेद के अर्थ जानने वाले बार अथवा तोन ब्राह्मण जो कुछ नियम बनावें या व्यवस्था दें, वह धर्म के अनुसार व्यवस्था मानी जायगी<sup>१</sup>। इन लोगों के विरुद्ध वेद न जानने वाले हजारों आदमों बका करें, पर उनकी बात न मानो जायगी।

जो ब्राह्मण अपने कथन का प्रमाण दे सकते हैं, अर्थात् जो ब्राह्मण प्रमाण एकत्र कर के धर्म की व्यवस्था देते हैं, ऐसे बहुत जानने वाले लोगों से पाप डरा करता है।

जैसे पत्थर पर पड़ा हुआ जल, सूर्य की किरणों की गर्मी से धीरे धारे सूख जाता है, उसी तरह वेद का अर्थ जानने वालों की परिषद् को आङ्गा से सारे पाप दूर हो जाने हैं।

ऊपर कही हुई विधि से प्रायश्चित्त बतलाने वाले और प्रायश्चित्त करने वालों का पाप का भागी नहीं बनता पड़ता।

सूर्य की किरणों की गर्मी और हवा के घलने से, जैसे जल सूख जाता है, वैसे ही प्रायश्चित्त करने से पाप का नाश होता है।

परिषद् में पाँच अथवा तीन ऐसे ब्राह्मण होने चाहिये, जो

१ चत्वारो वा त्रयो वापि यद्यप्युर्वेद पाराशः ।

स धर्मं इति विहेयो नेतरैत्यु सहस्रशः ॥

वेद और वेद के अङ्गों को भली भाँति जानते हो और जो आहितांशिः ( अग्नि का रात दिन घर में रखने वाले ) नहीं हैं ।

जो सुनि हैं, जिसे आत्मा का पूरा पूरा ज्ञान हो गया है, जो आप यह करता है और दूसरों को यह कराता है, जो ईश्वर की आराधना किया करता है—यदि इन गुणों में से युक्त एक भी ब्राह्मण धर्म परिषद् का सम्मय हो, तो उस एक के रहते भी वह धर्म परिषद् पूरी समझी जायगी ।

पहले कह आये हैं कि वेद के जानने वाले पाँच ब्राह्मणों के इकट्ठा होने पर 'परिषद्' कहलावेगी, किन्तु ऊपर कहे हुए लक्षण वाले पाँच ब्राह्मण यदि न मिलें—तो परिषद् में ऐसा ब्राह्मण ही हो जो वेद चाहे भले न जाने, पर प्रायश्चित्त का विधान बतला सके और उसे आजीविका की चिन्ता न रहती हो ।

इस नियम के विरुद्ध नाम मात्र के कोरे ब्राह्मण भले ही हजारों ही क्यों न जुड़ चैठें, पर वह धर्म परिषद् नहीं कही जायगी ।

जैसे लकड़ी का बना हाथी और स्मड़े का बना हिरन असली हाथी और हिरन नहीं कहा जाता, वैसे ही वेद वेदाङ्ग के ज्ञान से कोरा कुपढ़ मूर्ख ब्राह्मण असली ब्राह्मण नहीं है ।

जैसे बिना जल वाला गाँव या कुआ किसी मतलब का नहीं, जैसे अग्नि बिना हवन व्यर्थ कहा जाता है, वैसे ही मंत्र न जानने वाला ब्राह्मण भी असार है ।

कुपढ़ ब्राह्मण को दान देना चैसा ही है जैसा ऊसर भूमि में बीज बोना ।

जैसे किसी चित्र में रङ्ग भरने से उस चित्र की शोभा फूट निकलती है, वैसे ही विधि के अनुसार स्टकार करने से ब्राह्मण का ब्राह्मणत्व फूट निकलता है ।

जो ब्राह्मण केवल नाम मात्र के ब्राह्मण हैं। यदि वे किसी का प्रायश्चित्त की विधि बतलावें, तो वे पापी ब्राह्मण मरने के बाद नरक में पड़ते हैं।

जो द्विज, वेद का पाठ करते हैं और पञ्च यज्ञ करते हैं—वे ही असल में तीनों लोकों के धारण करने वाले हैं।

जिस तरह मरघट की आग मत्र से शुद्ध की जाने पर सब काम के योग्य है। जाती है, वैसे ही ज्ञान पा कर, ब्राह्मण भी सब कामों के योग्य हो जाते हैं।

जैसे सब तरह की मैली कुचैली वस्तु जल में फेंक कर और धो कर साफ़ कर ली जाती है, वैसे ही सारे पाप ब्राह्मण के बतलाये हुए प्रायश्चित्त से धो डालने चाहिये।

जो ब्राह्मण गायत्री नहीं जानता वह शूद्र से भी गया बीता है और जो ब्राह्मण गायत्री का जप करता है और ब्रह्म के तत्त्व को जानता है—वही सब से उत्तम है और सब का पूज्य है।

ऐसा ब्राह्मण यदि दुःशील (खोटा स्वभाव का) भी हो, तो भी वह पूजने योग्य है। पर शूद्र यदि बड़ा जितेन्द्रिय भी हो, तो भी वह न पूजा जायगा।

ऐसा कौन होगा जो नटघट और दुलतिथाँ मारने वाली गौ को छोड़ कर, बड़ी सीधी गदही का दूध ढुहने जायगा।

जो द्विज धर्म-शास्त्र रूपी रथ पर सदा सवार हो कर, वेद रूपी खड़ग को हाथ में लिये रहता है—वह हँसी में भी कोई बात कहे, तो और लोगों को उसे भी परम धर्म मानना चाहिये।

जो ब्राह्मण चारों वेदों का जानने वाला है, जिसका चित्त डाँवा डोल नहीं है, जो वेद के अङ्गों का जानता है और धर्म को

समझता बूझता है—ऐसा यदि प्रक भी ब्राह्मण मिले—तो वह उस परिषद् से अच्छा है जिसमें ऐसे अनेक ब्राह्मण हों, जो वेद का ज्ञानते हैं, पर ससार के प्रपञ्च में फँसे हुए हैं।

राजा ब्राह्मण की अनुमति लिये बिना किसो के प्रायश्चित्त की विधि नहीं बतलावेंगी।

ब्राह्मणों को बात न सुन कर, या उनसे बिना पूँछे जो राजा अपने आप पापी को प्रायश्चित्त बतलाता है, तो उस पापी का पाप सी गुना अधिक हो कर राजा के मोथे पर आ बैठता है।

ब्राह्मणों को चाहिये कि वे किसी मन्दिर के सामने बैठ कर, पापी को प्रायश्चित्त बतलावें और प्रायश्चित्त बतलाने के पहिले गायत्री का जप कर लें।

मन में यदि कोई पाप या शङ्का उदय हो तो उसे भी पहिले मिटा लेनी चाहिये।

प्रायश्चित्त करते समय चुटिया समेत सिर के बाल मुडवाना चाहिये। प्रायश्चित्त करने वाले को सुबह, दोपहर और शाम को सन्ध्या करनी चाहिये। प्रायश्चित्त करने वाले को रात्रि को गोशाला में सोना चाहिये और दिन में जिधर गऊ जाँय, उन्ही के पीछे फिरना चाहिये।

अगर गर्मी, सर्दी बहुत अधिक हो, या तेज़ हवा चलती हो, या मूलतान्धार पानी गिरता हो तो प्रायश्चित्त करने वाले को जहाँ तक वन पड़े गौमों की रक्षा करनी चाहिये। अपने शरीर की रक्षा पर ध्यान न देना चाहिये।

अपने घर का या दूसरे के घर का अन्न या चारा यदि गऊ खा ले, या उसका बच्चा दूध पी ले, तो गौमों को रोके नहीं।

गौ जब पानी पिये तब आप भी पानी पिये, जब वह सोचे तब आप भी सोचे। अगर गौ दलदल में फँस जाय, तो उसको जैसे बने चैसे निकाले। अपने प्राण जाने की चिन्ता न कर, गौ को निकाले।

जो गौ और ब्रह्मण की रक्षा के लिये प्राण देता है, वह ब्रह्म-हत्या के पाप से ह्रूट जाता है।

यदि किसी ने गौ मार डाली है तो उससे प्राज्ञापत्य ग्रन्त करवाना चाहिये।

प्राज्ञापत्य ग्रन्त को घार हिस्सों में वांटना चाहिये। अर्थात् एक दिन केवल दिन में भोजन कर के रहे, फिर दूसरे दिन केवल रात्रि में भोजन कर के रह जाय। तीसरे दिन विना माँगे जो कुछ मिल जाय, उसे खा कर बितावे और चैथे दिन केवल वायु पी कर रह जाय। इनीका नाम एक पाद प्रायश्चित्त है।

अब द्विपाद प्रायश्चित्त की विधि लिखी जाती है। पहिले दो दिन केवल एक बेर भोजन कर के रहे। इसके बाद दो दिन लों रात्रि में भोजन करे फिर दो दिन विना माँगे जो मिले, उससे निर्वाह करे और तीन दिन वायु पी कर काटे।

त्रिपाद प्रायश्चित्त में, तीन दिन लों दिन में भोजन करे, तीन दिन तक रात्रि में खाय, तीन दिन विना माँगे जो मिले, उससे निर्वाह करे और तीन दिन वायु पी कर काटे।

‘जिसे पूरा ( पूणे ) प्रायश्चित्त करना हो—वह चार दिन तक दिन में भोजन करे। फिर चार दिन तक रात्रि में भोजन करे। फिर चार दिन विना माँगे जो मिले, उससे दिन बितावे और चार दिन तक वायु पी कर रहे।

जपर कही हुई विधि के अनुसार प्रायशिच्छा कर तुकने पर ब्रह्म-भोज अर्थात् ब्राह्मणों को भोजन करावे और उन्हें दक्षिणा दे ।

फिर द्विजातियों का मंत्र जपेना चाहिये । ब्राह्मणों का भोजन करने से गौ की हस्ता करने वाला शुद्ध हो जाता है । इसमें कुछ भी सरदैह नहीं ।



## नवाँ-अध्याय

गर गौ की रक्षा करने के लिये गौ वांध रखी जाय  
 या रोकी जाय और ऐसी दशा में गौ मर जाय,  
 तो वांधने या रोकने वाले को गो-हत्या नहीं लग  
 सकती ।

अड्डगूठ के बराबर मोटी एक हाथ लम्बी और छोटे छोटे पत्तों  
 से युक्त लकड़ी को दण्ड कहते हैं ।

यदि ऊपर कहे हुए दण्ड को छोड़ किसी मेंटे दण्ड या लाठी  
 से कोई गौ को मारे और उसकी चेट से गौ मर जाय—तो  
 मारने वाले को गो-हत्या लगेगी और आठवें अध्याय में बत-  
 लाया हुआ दुगुना गो-ब्रत उसे करना पड़ेगा ।

गौ के घेरने से, उसे वांध रखने से, गौ को जोतने से और उसे  
 मारने से गो-हत्या होती है । गो-हत्या के ये ही चार कारण हैं ।

गौ के घेरने या उसे बन्द कर रखने से जो गो-हत्या लगती  
 है, उसे छुड़ाने के लिये एक पाद प्रायश्चित्त करवाना चाहिये ।

गौ को वांधने से यदि वह मर जाय, तो वांधने वाले को जो  
 गो-हत्या का पाप लगता है—वह द्विपाद प्रायश्चित्त करने से दूर  
 होता है ।

यदि गौ को जोत कर, कोई गो-हत्या करे तो गो-हत्या के पाप से छुटकारा पाने के लिये उसे त्रिपाद प्रायशिक्षण करना चाहिये ।

यदि कोई जान बूझ कर, गो-हत्या करे तो उसे पूरा प्रायशिक्षण करना चाहिये ।

चराचाह में घेर कर रखने से, घर में, किसी क़िले में, मैदान में, नदी या समुद्र के तट पर, तालाब या पहाड़ की गुफा में, या जलने हुए किसी स्थान में, जौ को रोक कर रखने से जो गो-हत्या होती है उसको “रोध-गो-हत्या” कहते हैं ।

यदि ज्ञप से, या गले में कड़ी रस्सी बांधने से घर या जल में जो गौ की मृत्यु होती है, वह दो तरह की हुआ करती है । अर्थात् जान कर की हुई गो-हत्या और अनजाने की हुई गो-हत्या ।

यदि हल में, या गाड़ी में जोते जाने से, या दो चार वैलों के साथ गौ के बांधने से, जो गऊ मरती है—तो उसे जोत-गो-हत्या कहते हैं ।

मत्त, या उन्मत्त, दशा में या जान बूझ कर हो या अनजाने ही हो—जो कोई लकड़ी, पत्थर ढण्डा आदि की मार से धायल कर के गौ को मारता है उसे “निपातन” नाम की गो-हत्या लगती है ।

यदि इस तरह से मारी हुई गौ सचेत हो कर और उठ कर खलने लगे, पांच सात ग्रास ( कौर ) खा ले, या पानी पीले—तो गऊ को धायल करने वाले को गो-हत्या नहीं लगती ।

‘एक पाद’ प्रायशिक्षण में प्रायशिक्षण करने वाले को सारे शरीर के रोम मुड़वा देने चाहिये । ‘द्विपाद’ में मूँछ और डाढ़ी

मुड़वानी चाहिये । ‘निपाद’ प्रायश्चित्त में एक वैल और ‘पूर्ण’ प्रायश्चित्त में एक जोड़ा वैल का दान करना चाहिये ।

अगर कोई लाठी या पत्थर से किसी गऊ का सींग तोड़ डाले, तो मारने वाले को “एक पाद” प्रायश्चित्त करना चाहिये । यदि सींग जड़ से उछड़ जाय, तो मारने वाले को ‘द्विपाद’ प्रायश्चित्त करना चाहिये ।

यदि कोई गौ की पूँछ तोड़ डाले, तो उसे एक पाद कुच्छु-व्रत करना होगा ।

हड्डी तोड़ने से द्विपाद, कान तोड़ने से निपाद और सम्पूर्ण अङ्ग भङ्ग करने पर पूरा कुच्छु व्रत करना पड़ेगा ।

सींग, हड्डी और कमर टूट जाने पर अगर गौ कः महीने तक ज़िन्दा रहे, तो प्रायश्चित्त करने की कोई आवश्यकता नहीं है ।

यदि मारने से गौ के किसी अङ्ग में धाव हो जाय, तो मारने वाले को अपने हाथ से उस धाव में तेल या मलहम लगाना चाहिये । जब तक गौ बिलकुल अच्छी न हो जाय, तब तक मारने वाला जौ, घास या कुट्टी खा कर रहे और धायल गौ की सेवा करे ।

इसके बाद ब्राह्मण को नमस्कार कर के मारने वाला निज गौ रूप को परित्याग करे । अर्थात् वह फिर मनुष्यों की तरह अन्न आदि खाने पीने लगे ।

अगर धायल गौ का धाव अच्छा हो जाय, पर उसका कोई अङ्ग टूट जाय, तो गौ-हत्या के प्रायश्चित्त का आधा प्रायश्चित्त करना चाहिये ।

देला, पत्थर या किसी हथियार से जो गौ की हत्या करता है, अब उसके प्रायश्चित्त का विधान लिखा जाता है ।

लकड़ी, डण्डे से गौ को हत्या करने वाले को सान्तपन् ब्रत करना चाहिये ।

ढेले से गोवध करने वाले को प्राज्ञापत्य, पथर से गौ-हत्या करने वाले को तस-कुच्छु-ब्रत और हथियार से गौ को मारने वाले को, अति-कुच्छु-ब्रत करना होगा ।

सान्तपन् ब्रत में पाँच, प्राज्ञापत्य में तीन, तस-कुच्छु में आठ और अति-कुच्छु ब्रत में तेरह गौ-दान करने चाहिये ।

जैसो गौ को हत्या की हो—वैसो हो गौ का दान करना चाहिये ।

महर्षि मनु का रुहना है कि वैसी गौ का दाम देने से भी काम चल सकता है ।

गौ का दागने या उसके चिन्ह लगाने के लिये, उसे बाँधने या रोक रखने से पाप लगता है ।

गाढ़ी आदि में जोतने के लिये, दुहने के समय अथवा सायद्वाल के समय, बन्नें जानवरों से रक्षा करने के लिये गौ को बाँधने में पाप नहीं लगता ।

गौ का दागने के लिये, उससे भारी दोषा दुलाने के लिये—उसका नाथने या उसे पहाड़ पर अथवा नदी में ले जाने के लिये प्रायश्चित्त करना चाहिये ।

गौ को दागने के लिये एक पाद, भारी दोषा लादने पर द्विपाद, नाथने पर तीन पाद और ऊपर कहे हुए सब काम करने पर पूर्ण प्रायश्चित्त करना चाहिये ।

चाहे गौ खुली हो या बँधी हो, यदि दागते समय वह मर जाय, तो एक पाद प्रायश्चित्त करना चाहिये ।

नारियल की, सन की ओर मुँज की रससी से और लोहे की संकल से गौ को न बांधना चाहिये। अगर बांधे तो हाथ में कुल्हाड़ी लिये उसके पास खड़ा रहे। अर्थात् यदि कोई कष्ट हो तो फौरन रससी काट दे।

कुश अथवा काँस की रससी से गौ को दक्षिण की ओर मुख कर के बांधना चाहिये।

यदि गौ की रससी में आग लग जाय और उसका कोई अङ्ग जल जाय तो प्रायश्चित्त करने की कोई ज़रूरत नहीं है।

अगर गौ के पास धास के द्वे में आग लग जाय और गौ जल जाय तो गायत्री का लप कर के मनुष्य पवित्र हो सकता है।

कुआँ वा बाबली के किनारे गौ को छोड़ देने, वृक्ष काट कर गौ के ऊपर गिरा देने अथवा गो-माँस खाने वाले के हाथ गौ बेचने से गौ के मारने की हत्या लगती है।

यदि गौ को कुएं अथवा बाबली से निकालते समय और पेड़ की ढाली के टूटने से गौ की कोख फट जाय, अंख फूट जाय, कान टूट जाय, या गौ कुएं में डूब जाय या निकालने में उसकी गद्दन या टाङ्ग टूट जाय, तो त्रिपाद प्रायश्चित्त करना चाहिये।

जल पिलाने के लिये, कुप, गडहे, वा पोखरे या किसी नदी, तालाब के पक्के धाट पर ले जाने से, गौ की किसी तरह सृत्यु हो जाय, तो उस गौ की हत्या का पाप कुप, तालाब अथवा धाट बनवाने वाले को नहीं लगेगा।

घर के द्वार पर, घर बनाने के लिये जो गडहा पानी के तिये खोदा जाता है, उसमें यदि गौ गिर कर मर जाय, तो प्रायश्चित्त करने की ज़रूरत नहीं है।

घर में वंधी हुई गाय को रात्रि में यदि साँप डस ले, बाघ उसे डठा ले जाय, घर में आग लग जाय, या बिजली के गिरने से गौ घायल हो कर मर जाय—तो प्रायशिच्चत्त नहीं करना होगा ।

‘शत्रु से घिर कर, भूखी प्यासी यदि गौ मर जाय, या मूसल-धार पानी बरसने से, घर के गिर पड़ने से गौ की मैत देह हो जाय, तो भी प्रायशिच्चत्त की जरूरत नहीं पड़ती ।

गौ, यदि लडाई में मारी जाय, घर जलने के समय जल जाय, या बन की आग में जल जाय तो भी प्रायशिच्चत्त की आवश्यकता नहीं है ।

यदि गौ का इलाज करते समय, या बच्चा टेढ़ा हो गया हो—उसे निकालने के लिये उसे वाँधना पड़े और उस दशा में वह मर जाय, तो भी प्रायशिच्चत्त न करना चाहिये ।

बहुत सी बीमार गौओं को एक ही घर में बैंड देने से, या इलाज करना न जानने वाले मनुष्य से इलाज कराने पर, यदि गौ मर जाय, तो प्रायशिच्चत्त करना पड़ेगा ।

गौ या बैल को सङ्कट में देख कर, जो लोग उसकी रक्षा नहीं करते और खड़े खड़े तमाशा देखते हैं—उस गौ या बैल के मरने पर, उन सब देखने वालों की गौ की हत्या का पाप लगता है ।

यदि गौ की हत्या का सन्देह कितने ही लोगों पर हो और असली हत्यारे का पता न चलता हो—तो राजा उन सब को सौगन्ठ बिला कर और गदाही ले कर असली हत्यारे का पता लगावे ।

यदि एक गौ की हत्या में कई एक आदमी साझीदार हों तो वे सब अलग अलग गो वध के पाप को दूर करने के लिये एक पाद वा चौथा हिस्सा प्रायशिच्चत्त करें ।

गो-हत्या होने पर गौ के लोहू की परीक्षा करनी चाहिये—जिससे यह मालूम हो जाय कि गौ को कोई बीमारी तो न थी।

यदि ऐसा हो तो गो-हत्यारे को अलग अलग प्रायशिक्षण करने पड़ेंगे।

मनु जी का मत है कि हर प्रकार के गो-वध के प्रायशिक्षण में चान्द्रायण व्रत करना चाहिये।

जो मनुष्य प्रायशिक्षण की विधि के अनुसार अपने बाल न मुड़वाना चाहे—उसे दुगुना प्रायशिक्षण करना चाहिये और प्रायशिक्षण की दुगुनी दक्षिणा भी देनी चाहिये।

पर राजा, राज-पुत्र या वेद जानने वाले ब्राह्मण का प्रायशिक्षण विना बाल मुड़ाये ही हो सकता है।

जो आदमी प्रायशिक्षण करते समय बाल नहीं मुड़ाते या दुगुना दानादि नहीं करते, उनका पाप ज्यों का स्तो वना रहता है। उनका पाप नहीं छूटता।

जो लोग प्रायशिक्षण की विधि वतलाते समय प्रायशिक्षण करने घाले के बाल मुड़वाने की विधि नहीं वतलाते—वे लोग मरने के बाद नरक में गिरने हैं।

जो कुछ पाप किया जाता है, वह जा कर बालों में अटक रहता है।

यदि लोग को प्रायशिक्षण करने की आवश्यकता पड़े और वह सुहागिन हो या कुमारी हो, तो उसके सिर के आगे के दो अङ्गुल बाल काट लेना चाहिये। क्योंकि लियों के सिर के बाल मुड़वाने की मनरी है।

रात्रि में न सो खी को गोशाला में सोना चाहिये और न दिन में गौआँ के पीछे पीछे घूमना चाहिये । लियों को गौ के पीछे नदियों के सड़ग पर या बन में कभी न जाना चाहिये ।

लियाँ मृगबर्म नहीं पहिन सकती, इस लिये वे दिन में तोन वेर नहा कर, भगवान की आराधना कर के, व्रत को पूरा करें ।

लियाँ अपने भाई-बन्दों के साथ रह कर ही कुच्छु चान्द्रा-यणादि-व्रत कर सकती हैं । उन्हें सदा वर में रह कर और पवित्र हो कर सारे नियम पालने चाहिये ।

इस ससार में जो मनुष्य गो-हत्या के पाप को छिपा रखेगा—वह मरने पर अवश्य 'काल-सूत्र' नाम के घोर नरक में पड़ेगा ।

नरक भोग चुकने पर भी इसका छुटकारा न होगा । उसे फिर यहाँ जन्म लेना पड़ेगा और सात जन्म तक वह नयुं सक, दुःखी और कोळी होगा ।

इसलिये गो-हत्या के पाप को कभी न छिपावे । उसे तुरन्त प्रकट कर देना चाहिये और सदा अपने धर्म का पालन करना चाहिये ।

लियों, बालकों और गौओं पर पुरुषों को कभी कोध न करना चाहिये ।

## हमारा-विचार

ठवें अध्याय के अन्तिम भाग में और समूचे नवें  
ग्राम अध्याय में महर्षि पाराशर जी ने गौं की रक्षा  
करने का उपदेश दिया है।

जिस तरह गौं की रक्षा का बड़ा पुण्य बतलाया है, उसी  
तरह महर्षि ने गो-हत्या को महा पातक बतला कर कड़े कड़े  
प्रायश्चित्तों की विधि कही है।

हिन्दू मात्र का कर्तव्य है कि वह गौं की रक्षा करे। काँकि  
भारतवर्ष में खेती बारी ही का उद्यम अधिक होता है। यहाँ के  
रहने वालों में नब्बे फी सदी लोगों का पेट खेती बारी से  
भरता है।

गौं के बिना खेती बारी का काम नहीं चल सकता। अरब  
बाले ऊर्मों से और यूरुप बाले कल और घोड़ों के सहारे से हल  
बलाते हैं, पर तीस करोड़ भारतवासियों को जान गौओं के  
द्वारा मैं है।

गो-धंश हिन्दुओं का जीवन है। उनके भगवान् कृष्णचन्द्र को  
गौएँ बहुत प्यारी हैं। उन्होंने अवतार ले कर गौओं का स्वयं सेवा  
और रक्षा की थी। इस लिये श्री कृष्णचन्द्र के उपासकों को गौं  
की रक्षा तन मन धन से करनी चाहिये।

तबै अध्याय के पढ़ने से यह बात समझते दें नहीं लगती कि जो हिन्दू गौ की रक्षा नहीं करता वह हिन्दू नहीं है।

जो पुरानी चाल के हिन्दू हैं, जिनके घरों में धर्म शाल की मर्यादा का आदर होता है—उनके यहाँ अब भी गो-धन नहीं बेचा जाता है।

जो हिन्दू हो कर बूढ़ी अथवा दूध न देने वाली गौ के खाने पीने का प्रवन्ध नहीं करता और उसे पुण्य कर डालता है—उसे गो-धन का पाप लगता है।

क्योंकि जब वह स्वयं ऐसी गौ का भार नहीं उठा सकता, तब वह यह सोच सकता है कि दूसरा भी उसकी रक्षा न कर सकेगा। अन्त में वह ऐसे लोगों के हाथ बेची जायगी जो गो-मांस-भक्षी हैं।

इस लिये भगवान् पाराशर जी के कहने के मनुपार ऐसे के हाथ गौ बेचने वाले को भी गो-हत्या का पाप लगता है।

जो सदाचारी हैं और जिनका जन्म अच्छे कुल में हुआ है—वे कृतज्ञ ( पहसान-फरासेश ) नहीं होते। यदि ऐसों के साथ कोई छोटा सा भी पहसान करे—तो वे कभी उसे नहीं भूलते और सदा उसके कृतज्ञ बने रहते हैं। जो किसी के उपकार को नहीं मानता वही कृतज्ञ कहलाता है।

कृतज्ञ की शालों में निर्दा लिखी है और सभ्य-समाज भी ऐसों को शुरी निर्गाह से देखता है। अगर हम सचमुच मनुष्य हैं और यदि हमको अपने मनुष्य होने का अभिमान है तो हमें गौओं के उपकारों को मानना चाहिये। उन्हें कभी न भूलन-चाहिये।

गौ जिस तरह अपने मित्र को दूध देती है, वैसे ही अपने शत्रु को भी दूध देती है। अपना निर्वाह करने के लिये गौएँ

किसी से मालमलीदा नहीं मांगतीं। वे अन्न मनुष्यों के लिये और आदमियों के शौक और आराम की चीज़ें—ऊंट, घोड़े और हाथियों के लिये छोड़ देती हैं। आप वेचारी अन्न के भूसे ही पर अपने दिन काटती हैं।

हल के जुएँ को अपने कन्धे पर रख कर बैल खेत में मेहनत करते हैं—किसके लिये? मनुष्य जाति के लिये। गौएँ भूसा, करबी, चोकर, खली आदि खा कर, आपको दूध, दही, घी, गोबर देती हैं। मनुष्य की माता और गो-माता में अगर कुछ अन्तर है, तो यही है कि गो-माता मनुष्यों की ऐसी दयावती माता है कि अपने सन्तान को मरने पर भी नहीं भूलती है। गङ्गा कवि ने लिखा है—“सुण्हु चाम सेवत चरण।” अर्थात् मरने पर भी अपने चमड़े की जूतियों से मनुष्यों के पैरों की रक्षा करती है।

जो वश मनुष्य जाति का इतना बड़ा उपकार करता हो, उसके साथ क्या कभी निठुर व्यवहार शोभा देता है। खास कर उन लोगों को जो पढ़े लिखे हैं और जिनमें भलाई बुराई समझने की वुद्धि है।

गो-वंश को रक्षा का यही उपाय है कि प्रत्येक गृहस्थ अपनी शक्ति के मनुसार एक या दो गौओं का पालन करे। क्योंकि दूध, दही और घी के बिना हम लोगों<sup>१</sup> का शरीर पुष्ट नहीं हो सकता। दूध दही के बिना हमारी वुद्धि भी निकम्मी हो जाती है।

१ जो लोग निरामिष भोजी हैं अर्थात् जो मर्सि न खा कर, अन्न और शार पात से निर्वाह करते हैं।

## दसवाँ-अध्याय

लियुग में खी के साथ खोटे काम करने वाले लोग  
कहुत हुआ करते हैं। इस लिये इस अध्याय में  
भगवान् पाराशर मुनि ने उस पाप के दूर करने  
के प्रायशिक्त बतलाये हैं।

पाराशर जी ने लिखा है कि यदि खी मदिरा पी ले तो वह  
पतिता हो जाती है। उसका आधा शरीर पतित होता है और  
नरक में गिरने से भी उसका पाप नहीं हटता।

जिसकी खी ने मदिरा पीली ही उसे कृच्छ्र सान्तपन व्रत  
करना चाहिये और गायत्री जपनी चाहिये।

ऐसी की गो-मूत्र, गोबर और गौ के दूध में कुश से हुआ  
हुआ जल मिला कर पीना चाहिये। फिर वे एक रात उपवास करें।

जो खी पति के बिदेश जाने पर, या पति के मरने पर या  
पति से छोड़ी जाने पर, दूसरा पति कर लेती है उस पतिता  
पापिनी खी को दूसरे राज्य में लेजा कर छोड आना चाहिये।

यदि कोई ब्राह्मणी किसी दूसरे मनुष्य के साथ घर से चली  
जाय, तो उसे फिर कभी अपने घर में न आने देना चाहिये।  
उस खी को पाराशर भगवान् 'नष्टा' बतलाते हैं।

जो खी अपने नातेदारों और पुत्रों को छोड कर चली जाती  
है, उसके यह लोक और परलोक; दोनों नष्ट हो जाते हैं।

## ग्यारहवाँ-अध्याय

यदि कोई ब्राह्मण गौ का मांस, या चाणडाल का य अन्न खा ले—तो उसे कृच्छ्र चान्द्रायण-ब्रत करना होगा।

यदि यह काम क्षत्रिय या वैश्य करें तो उन्हें आधा कृच्छ्र चान्द्रायण<sup>१</sup> ब्रत करना होगा।

अगर शूद्र अनखानी चीज़ें खा ले, तो उसे प्राजापत्य-ब्रत करना होगा।

ब्राह्मण को एक, क्षत्रिय को दो, वैश्य को तीन और शूद्र को चार गो-दान करने पड़ेंगे।

शूद्रान् ( शूद्र का अन्न ) अशौचान् ( सूतक लगे हुए मनुष्य का अन्न ) अमोज्यान् ( न स्वाने योग्य भोजन ) शङ्कितान् ( जिस

१ कृष्णपक्ष में प्रति-दिन एक एक ग्रास भोजन घटाना और शुक्रपक्ष में बसी तरह एक एक ग्रास बढ़ाना होगा। अमावस्या को कुछ भी नहीं खाना चाहिये। यही चान्द्रायण-ब्रत की विधि है।

ग्रास मुर्गी के अपडे के बराबर बनाना चाहिये।

अन्न के खाने में किसी तरह की मन को शङ्का उत्पन्न हो। निषिद्धान्न (खराव भोजन) और उच्छुष्टान्न (जूठा अन्न) यदि कोई ब्राह्मण अनज्ञाने या विपद में पड़ कर खा ले, तो जब मालूम हो, तब उसे कुच्छु-सान्त्वना-ब्रत करना चाहिये।

यदि अन्न का सांप, न्योला अथवा बिलो जूठा कर डाले, तो उस अन्न में तिल कुश और जल डाल देने से वह अन्न शुद्ध हो जायगा। इसमें कोई सशय की बात नहीं।

यदि शूद्र अनज्ञाना अन्न खा ले तो वह पञ्चगव्य से शुद्ध हो जाता है।

यदि क्षत्रिय और वैश्य अनज्ञाना अन्न खा लें तो वे प्राजा-पत्य-ब्रत कर के शुद्ध होंगे।

ब्राह्मणों की ज्योनार में यदि एक भी ब्राह्मण अपनी पत्तर छोड़ कर उठ जाय तो उस पड़ूत में कोई भी ब्राह्मण फिर भोजन न करे।

यदि लोभ में पड़ कर, कोई ब्राह्मण भोजन करता रहे, तो उसे कुच्छु-सान्त्वना-ब्रत कर के, उस दोष का प्रायश्चित्त करना पड़ेगा।

दूध जैसा सफेद लहसुन, वैगन, गाजर, प्याज, ताढ़ी, देवता को चढ़ायी हुई सामग्री या रुपया पैसा, ओला, ऊँटनी और बकरी के दूध को जो ब्राह्मण अनज्ञाने भी खाले, तो भी उसे तीन रात्रि तक ब्रत कर के पञ्चगव्य पीना चाहिये।

अगर कोई ब्राह्मण अनज्ञाने मैंडक या चूहे का मांस खा ले तो उसे चौबीस धण्टे उपवास कर के भोजन करना चाहिये। ऐसा करने से वह शुद्ध होता है।

चाहे क्षत्रिय हो, चाहे वैश्य, यदि वह धर्म कर्म से रहता ही और पवित्रता से रहता हो, तो उसके घर जा कर होम, यज्ञ, वा उसके पिता के श्राद्ध में ब्राह्मण सदा भोजन कर सकता है।

ब्राह्मण नदी के तट पर, शूद्र का दिया हुआ अन्न खा सकते हैं।

यदि कोई ब्राह्मण जन्म या मरण का सूतक लगे हुए मनुष्य का अन्न खा ले तो उसकी शुद्धि की विधि अब लिखी जाती है।

शूद्र के जन्म-सूतक में उसका अन्न खाने से, शुद्धि के लिये आठ हजार गायत्री का जप करना चाहिये।

जन्म-सूतक में यदि वैश्य का अन्न कोई ब्राह्मण खा ले तो उसे शुद्ध होने के लिये पाँच हजार गायत्री जपनी चाहिये।

जन्म-सूतक में क्षत्रिय का अन्न यदि कोई ब्राह्मण खा ले, तो वह ब्राह्मण तीन हजार गायत्री जपने से शुद्ध होता है।

जन्म-सूतक लगे हुए ब्राह्मण का अन्न यदि ब्राह्मण को खाना पड़े तो वह केवल प्राणायाम करने या वामदेव्य सामवेद पाठ करने से शुद्ध हो जाता है।

यदि शूद्र के घर से सूखा अन्न या चांदल, धी, दूध और तेल आदि आवे और अपने घर पर रखें वनायी जाय तो वह अन्न पवित्र ब्राह्मण के भी भोजन करने योग्य है।

विपत्ति पड़ने पर यदि ब्राह्मण को शूद्र के घर में भोजन करना पड़े तो मन में पछतावा करने ही से ब्राह्मण शुद्ध हो जाता है। यदि ऐसा न करे तो सौ बार गायत्री का जप करने से वह शुद्ध हो जायगा।

शूद्रों में दास, गोपाल, कुल-मित्र ( शायद कुर्मी ) अर्द्धसौर ( औधिया ) का अन्न ब्राह्मण भोजन कर सकता है।

शूद्र कन्या के ब्राह्मण से जो लड़का पैदा होता है, और उसका संलकार यदि हो गया हो तो उसको "दास" कहते हैं।

परन्तु यदि उसका संलकार न किया गया हो तो उसे "नापित<sup>१</sup>" कहते हैं।

शूद्र कन्या के ज्ञनिय से जो बेटा उत्पन्न होता है उसे "गोपाल" कहते हैं।

ब्राह्मण विना रोक ठोक गोपाल के घर में भोजन कर सकते हैं।

वैश्य कन्या के ब्राह्मण से उत्पन्न सन्तान को 'ब्रह्मसिर' कहते हैं। उनके घर में भी ब्राह्मण भोजन कर सकते हैं।

यदि कोई ऐसी जाति के लोगों के वर्तन में दही, दूध वा धी खा ले, जिनका अन्न जल नहीं लेना चाहिये—तो ऐसा करने वाले ब्राह्मण, ज्ञनिय, वैश्य अथवा शूद्र को ब्रह्मकूर्च<sup>२</sup> भोजन करा और उपवास करा कर, प्रायश्चित्त की विधि बनलानी चाहिये।

शूद्रों का उपवास न करावे। वे केवल दान देने से शुद्ध हो जाते हैं।

ब्रह्मकूर्च की इतनी महिमा है कि चाण्डाल सी उसे खा कर चौबीस घण्टे में शुद्ध हो सकता है।

पञ्च-गव्य वड़ा पवित्र और पाप का नाश करने वाला है।

काली गाय का मूत्र, सफेद गाय का गोवर, तर्कि की रङ्गत बाली गाय का दही और कपिल ( पीला ) वर्ण की गौ के धी का पञ्च-गव्य बनाना चाहिये।

१ नाहूं को भी कहते हैं।

२ गो-मूत्र, गो-भय, ( गोवर ) गो-दधि, गो-दूध और गो-धूंत, ( धी ) एवम् कुश के जल को आपस में मिलाने से जो पदार्थ तथ्यार होता है, उसका नाम ब्रह्मकूर्च है।

यदि पांचों रङ्ग की गैरिन मिलें तो केवल कपिल ( पीला ) रङ्ग की गाय से ही कास चला लेना चाहिये ।

गो-मूत्र एक पल ( एक प्रकार की तोल ) दही तीन पल, धी एक पल, गोबर आधे अँगूठे की वराबर, दूध सात पल और कुश का जल एक पल लेना चाहिये ।

गायत्री पढ़ कर गो-मूत्र, “ गन्धद्वारी<sup>१</sup> ” इत्यादि मंत्र पढ़ कर गोबर, “ आप्यायस्त्वं ” मंत्र पढ़ कर, दूध; “ दधिकान्व ” मंत्र पढ़ कर दही, “ तेजोऽसि शुक्रम् ” मंत्र पढ़ कर धी और “ देव-स्थत्वा ” मंत्र पढ़ कर, कुश का जल लेना चाहिये ।

इसके बाद ऋक् मंत्र का पाठ कर के पञ्चगव्य शुद्ध करे । फिर उसे अश्वि के पास रखे ।

“ आपोहिष्टेत्यादि ” मंत्र पढ़ कर सब द्रव्यों को हिला हिला के एकत्र कर मिलावे ।

“ मानस्तोक ” मंत्र से पञ्चगव्य को शुद्ध ( मंत्र-पूत ) करे ।

पीछे से जिस कुश की फुनगी ढूढ़ी या कटी न हो और जिसका रङ्ग तोते की तरह हरा हो—उस कुश से पञ्चगव्य का अश्वि में हवन करे ।

“ इरावती इदं विष्णुः मानस्तोक शम्बती ”—मंत्र पढ़ कर हवन करना चाहिये ।

अन्त में हवन करने के बाद जितना पञ्चगव्य बचे, उसे पी ले ।

<sup>१</sup> ये मंत्र पूरे नहीं हैं । जो मंत्र पढ़ने चाहिये उनके आदि का पहिला शब्द सहृत ( इशारे ) के लिये हे दिया गया है । ये सब वेद के मंत्र हैं ।

पञ्चगव्य को पीने के पहिले प्रणव ( ओं ) कह कर उसे हिलावे । प्रणव कह कर उसे मिलावे । प्रणव कह कर, उसे उठावे और प्रणव कह कर ही उसे पी ले ।

जो पाप देहधारियों की हड्डियों तक में विध गया हो—वह इस ब्रह्मकूर्व के पीने से वैसे ही भस्म हो जाता है, जैसे अग्नि से लकड़ियों का ढेर ।

जल पीते समय यदि जल मुँह से निकल कर, पीने वाले जल में गिर पड़े, तो वह जल पीने योग्य नहीं रहता ।

उस जल के पीने वाले को चान्द्रायण व्रत करना पड़ेगा ।

यदि किसी कुप में कुत्ता, स्यार या बन्दर गिर पड़े या कोई उस कुए में कोई हड्डी या चमड़ा ढाल कर, जल को अपवित्र कर दे, तो उस कुए के अपवित्र जल के पीने वालों को नीचे लिखी हुई विधि से प्रायशिक्ति करना चाहिये ।

अगर ब्राह्मण ने उस कुप का जल पी लिया हो तो वह तीन रात्रि, ज्ञनिधि ने पिया हो तो वह दो रात्रि और वैश्य ने पिया हो तो वह दिन भर, उपवास करे तो शुद्ध हो ।

इस प्रायशिक्ति में शूद्र को भी एक रात्रि का उपवास करना चलाया गया है । ऐसा करने से शूद्र का पाप छूटता है ।

जो ब्राह्मण, “पाक-निवृत्त” या “पाक-रत” अथवा “अपच” ब्राह्मण का अन्न खा ले, तो उसको चान्द्रायण व्रत करना चाहिये ।

“अपच” ब्राह्मण को दान देने से दान का यही फल मिलता है कि दान देने वाले और दान लेने वाले दोनों ही नरकगमी होते हैं ।

“पाक-निवृत्त” ब्राह्मण वह है जो विधि पूर्वक घर में अश्वि को स्थापित (रख) कर, पञ्चयज्ञ नहीं करता है।

जो ब्राह्मण नित्य स्वरेरे उठ कर स्वयं पञ्चयज्ञ कर के दूसरे के अन्न से अपना पालन करते हैं, वे “पाक-रत” कहलाते हैं।

जो ब्राह्मण गृहस्थी छोड़ कर भी दान करता है—धर्म का तत्व जानने वाले अष्टवियों ने, उसे “अपच” बतलाया है।

युग-धर्म के भनुसार चलने वाले ब्राह्मणों की निन्दा न करनी चाहिये। क्योंकि ब्राह्मण लोग ही युग-रूप से इस संसार में अवतार लेते हैं।

यदि कोई मनुष्य ब्राह्मण को धमकावे, डरावे या किसी माननीय श्रेष्ठ पुरुष के साथ दान चीत करते समय “तुम” कहे, तो उसे चाहिये कि स्नान कर के वह दिन भर ऐसे लोगों को प्रसन्न करने के यत्न में लगा रहे।

यदि कोई मनुष्य किसी ब्राह्मण के तिनके से भी मार दे उनके गले में कपड़ा बाँध कर, उनका अपमान करे या बहस में उन्हें हरा दे, तो ऐसा करने वाले को चाहिये कि वह उस ब्राह्मण को प्रणाम कर, प्रसन्न करे।

यदि कोई मनुष्य किसी ब्राह्मण के मारने को लाठी डावे, तो उसे एक रात्रि का उपवास करना चाहिये।

यदि ब्राह्मण को कोई मनुष्य ज़मीन पर दे पटके, तो उसे तीन रात तक उपवास करना चाहिये।

यदि कोई मनुष्य किसी ब्राह्मण को लाठी से मार कर, लौह लुहान कर दे, तो उसे कृच्छ्र-ब्रत करना पड़ेगा।

यदि सभी पाप एक साथ इकट्ठे हो गये हों तो पापी गायत्री का एक लाख जप करने से—सब पापों से छुट कर, पवित्र हो जाता है।

## बारहवाँ-अध्याय

दा स्वप्न देखने, हजामत कराने और मरघट की चित्ता का धुम्रां देह में लगाने के बाद स्नान करना चाहिये ।

यदि ब्राह्मण, कृत्रिय या वैश्य अनज्ञाने विष्ट्रा, मूत्र अथवा मदिरा पी लें तो उनका फिर से संस्कार करना चाहिये ।

दुबारा संस्कार होने पर मृग-चर्म, मैखला, दण्ड धारण और भिक्षाटन भी करना होगा ।

पर यदि शूद्र और लौ की शुद्धि करानी हो तो उन्हें प्राजापत्य व्रत करना चाहिये ।

व्रत करने के बाद, स्नान कर के पञ्चगव्य पीने से शुद्धि होती है ।

अगर नित्य स्नान-क्रिया में कोई वाधा पड़े, या घर में स्थापित की हुई अग्नि बुझ जाय, या किसी अन्य कारण से अग्नि के कार्य में कोई वाधा पड़ जाय तो कृत्रिय, वैश्य और शूद्र को दो प्राजापत्य व्रत या तीर्थ-यात्रा अथवा न्यारह वैल दान करना चाहिये । ऐसा करने से उनकी शुद्धि हो जायगी ।

यदि ब्राह्मण से ऊपर कहे हुए काथ्यों में भूल हो, या वह ऊपर कहे हुए कर्म न कर सके तो उसे धन में किसी चौराहे पर चुटिया समेत सिर मुड़वा कर, तीन प्राजापत्य व्रत करना चाहिये और एक गौ और एक वैल दान करने चाहिये ।

स्वायथ्मभुव मनु ने कहा है कि ब्राह्मण-गण ऐसा करने से ऊपर कहे हुए पाप से छूट कर, फिर पहिले की तरह ब्राह्मण हो जाते हैं ।

बुद्धिमान लोगों ने पांच तरह के स्नान बतलाये हैं । जैसे आश्रेय, वारुण, ब्राह्म, वायव्य और दिव्य ।

१. भस्म को शरीर में लगाने को आश्रेय<sup>०</sup> स्नान कहते हैं ।

२. जल से स्नान करने को वारुण स्नान कहते हैं ।

३. “अपोहिष्टा मयोभुव” इत्यादि मन्त्र को मन में पढ़ कर मानसिक स्नान का नाम ब्राह्म-स्नान है ।

४. धूल अङ्गों में लगा कर स्नान करने को वायव्य स्नान कहते हैं ।

५. धूप रहते वर्षा के जल में स्नान करने को दिव्य-स्नान कहते हैं ।

दिव्य-स्नान करने वाले के गङ्गा-स्नान का फल मिलता है ।

जब ब्राह्मण लोग स्नान करने जाते हैं, तब उनके प्यासे पुरखे चायु रूप में, उनके साथ साथ घलते हैं ।

स्नान कर चुकने पर यदि ब्राह्मण अपनी धोती विना तर्पण किये निषोड़ लें, तो उनके पुरखे निराश हो लौट जाते हैं ।

इस लिये विना तर्पण किये कभी धोती न खोनी चाहिये ।

जो द्विज स्नान कर के खड़े हो खड़े सिर के बाल झाड़ते हैं,  
या जल के ऊपर कुस्ता करते हैं—उनका दिया हुआ जल, देवता  
और पितर नहीं लेते ।

सिर पर पगड़ी या टोपी लगा कर, धोती का काँच खोल  
कर, चुटिया की गाँठ न लगा कर और यहोपचीत न रख कर  
द्विजगण आचमन करने पर भी अपवित्र ही रहते हैं ।

सूखे में रह कर जल में और जल में रह कर सूखी जगह  
पर आचमन न करना चाहिये ।

जल में रह कर जल में और स्थल पर रह कर स्थल पर  
आचमन करने से पवित्रता ही सकती है ।

स्नान कर के, छीक कर, सो कर, भोजन कर के रास्ता छल  
कर, और कपड़े बदलने के पहिले यदि आचमन किया भी हो,  
तो भी आचमन कर लेना चाहिये ।

छीकने, थूकने, दाँतों से जूँठन निकलने पर, फूठ बोलना  
मालूम होने पर, या पतित मनुष्य के साथ बात चीत करने पर,  
दहिना कान छू लेना चाहिये ।

ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, सोम, सूर्य और वायु—ये सारे देवता  
ब्राह्मण के दहिने कान में रहा करते हैं ।

सूर्य को किरणों से पवित्र हुए दिन ही में स्नान करना  
अच्छा है ।

चन्द्र ग्रहण को छोड़ कर, रात्रि में स्नान न करना चाहिये ।

मरुदुगण, रुद्रगण, वसुगण, आदित्यगण तथा अन्यान्य देवता  
सभी चन्द्रमा के भीतर विराजमान रहते हैं, इस लिये चन्द्र-ग्रहण  
के समय अवश्य स्नान करना चाहिये ।

खल-यज्ञ, विवाह, सकान्ति और ग्रहण के समय रात्रि में दान करना चाहिये। किन्तु वैसे रात्रि में कभी दान न करे।

पुत्र जन्म में, यज्ञ काल में पुण्याहवाचत में राहु देखने पर रात्रि ही में दान करना चाहिये।

रात के दूसरे और तीसरे पहर को महानिया कहते हैं। रात के पहिले और चौथे पहर में लोग दिन की तरह स्नान कर सकते हैं।

चाण्डाल और शराब वेचने वाले को छू कर कपड़ों सहित स्नान करना चाहिये।

अस्थि-सञ्चय<sup>१</sup> करने के पहिले यदि रोबे तो उसे स्नान करना चाहिये।

दशाह के समय रोने से स्नान करना चाहिये और स्नान करने के पहिले आचमन करना चाहिये।

जब सूर्य-ग्रहण या चन्द्र-ग्रहण पड़ता है, तब सभी जल गङ्गा जल के समान पवित्र हो जाते हैं। उस समय लोग हर जगह स्नान कर सकते हैं।

कुश से पवित्र किये हुए जल से स्नान करने, उससे आधमन करने और उसे पीने से, सोमरस पीने का फल होता है।

जो ब्राह्मण अग्नि-होत्र नहीं करते अथवा सन्ध्योपासन नहीं करते या वेद को नहीं पढ़ते—वे “धृष्टल” कहलाते हैं।

यदि ब्राह्मण सारा वेद न पढ़ सके तो कम से कम उन्हें उसका एक अंश तो अवश्य ही पढ़ लेना चाहिये।

<sup>१</sup> हिन्दुओं के यहाँ यह प्रथा है कि यदि कोई ऐसे स्थान में मर जाय जहाँ गङ्गा नहीं है तो दाह करने वाले मरे हुए की जलाई हुई हाहियों की ओर गङ्गा में ढाल आते हैं। हाहियों का बीनना “अस्थि-सञ्चय” कहलाता है।

शूद्र के अन्न जल से पले हुए ब्राह्मण का वेद पढ़ना, जप करना या हवन करना निष्फल होता है। इन उत्तम कार्यों को कर के भी उनकी सद्गति नहीं होती है।

शूद्र का अन्न खाने से शूद्र के साथ उठने, बैठने से और शूद्र से विद्या पढ़ने से ब्राह्मण में ज्ञान उत्पन्न हो जाय, तो भी वह पतित होता है।

पाराशर जी कहते हैं कि जो ब्राह्मण शूद्र के अन्न जल से पलता है—वह किस नीच योनि में जन्मेगा—यह हम ठीक ठीक नहीं कह सकते हैं।

मनु जी का कहना है कि ऐसा ब्राह्मण १२ बार गिर्ह, १० बार सुप्रर, और ७ बार कुत्ता होगा।

जो ब्राह्मण शूद्र से दक्षिणा ले कर, उसके लिये हवन आदि करता है, वह ब्राह्मण शूद्र हो जाता है और शूद्र ब्राह्मणत्व लाभ करता है।

जो ब्राह्मण मौनवत धारण करें, उन्हें कभी धात चीत न करनी चाहिये।

यदि ब्राह्मण भोजन करते समय बोल डटे तो उसे फिर भोजन न करना चाहिये।

जो ब्राह्मण आधा भोजन कर, भोजन-पात्र में (थाली से) जल पीते हैं—उनके 'देव-कर्म' और पितृ-कर्म दोनों ही नष्ट होते हैं।

तर्पण करने का अधिकार होने पर भी जो द्विज तर्पण नहीं करते उनसे देवता अप्रसन्न रहते और उनके पितृगण निराश हो कर लौट जाते हैं।

न्यायवान् और वुहिमान् गृहस्थी को सदा धर्म का खूबाल रखना चाहिये ।

न्याय के अनुसार धन पैदा करु सदा ज्ञान को रक्षा करनी चाहिये । क्योंकि जो लोग न्याय पथ पर नहीं चलते, वे धर्म-कर्मों से बाहर होते हैं ।

अश्रिहोत्री-ब्राह्मण, कपिला गौ, यज्ञकारी राजा, भिक्षुक और समुद्र के दर्शन करने ही से पुण्य होता है । इस लिये इनके दर्शनों का सदा प्रयत्न करे ।

अरण्णो<sup>१</sup> काली विस्ती, चन्दन, अच्छी मणि, धी, तिल और बाले मृग-धर्म को घर में रखना चाहिये ।

सौ गाय और एक साँड़ जिस खेत में चर सकें, उस खेत से दसगुने खेत को एक गो-धर्म कहते हैं ।

यदि कोई मन, वचन या कर्म से ब्रह्म-हत्या आदि बड़ा पाप करे, तो एक गो-धर्म भूमि का दान देने वह उस पाप से छुटकारा पा जाता है ।

बहुत कुटुम्ब बाले धन-हीन ब्राह्मण को, विशेष कर वेद जानने वाले ब्राह्मण को, दान देने से दाता की आयु (उम्र) बढ़ती है ।

चापड़ाली को छूने से दो दिन, प्रसूति (जन्म) को छूने से चार दिन, रजस्ता को छूने से छः दिन और पतिता को छूने से आठ दिन तक, छूने वाला अपवित्र रहता है ।

इस लिये इनके पास जाने से भी स्नान करना चाहिये ।

<sup>१</sup> सभी पैड़ की लकड़ी जिसके राढ़ने से यज्ञ में अश्रि निकाली जाती है ।

यदि कोई अनजाने उन्हें हृले, तो उसे स्नान कर के सूख्य का दर्शन करना चाहिये। ऐसी करने से वह पवित्र हो जाता है। ॥

यदि कोई अज्ञानी ब्राह्मण वावली, कुआ, तालाब में मुँह डाल कर जल पीए तो अगले जन्म में उसे कुत्ता बनना पड़ेगा।

यदि कोई थकावट, क्रोध, अथवा तमोगुण की अधिकता से या भ्रम, भूख, प्यास और भय के कारण दान आदि पुण्य कर्म न करे, तो उसे तीन दिन तक प्रायश्चित्त करना होगा।

ऐसे मनुष्य को महानदियों के किसी सङ्घम पर नित्य तीन वेर स्नान करना चाहिये। फिर उसे ब्राह्मणों की योजन कराना होगा और गोदान देना पड़ेगा।

यदि कोई आदमी किसी दुराचारी ब्राह्मण का अन्त खा ले तो उसे एक दिन बिना खाये रहना पड़ेगा।

जो ब्राह्मण मदाचारी और वैदान्तवादी हों, उनका अन्त एक दिन रात खाने से पापी पाप से हूट जाता है।

जूठे मुँह या मल-मूत्र त्याग कर पवित्र हुए बिना, अन्तरिक्ष (कोठे पर) या निराले रास्ते पर जो मरता है—उसका सूतक कृच्छ्र-ब्रत करने से दूर होता है।

अब कृच्छ्र-ब्रत का विधान लिखा जाता है। इस ब्रत में दस हजार गायत्र जपनी चाहिये। तीन सौ प्राणायाम करना चाहिये। बारह बार सिर भिगो कर किसी तीर्थ में स्नान करना चाहिये। फिर दो योजन की तीर्थ-यात्रा करनी चाहिये।

यदि कोई ब्राह्मण का मारने वाला किसी चतुर्वेदिन के पास प्रायश्चित्त की विधि पूँछने जाय, तो उसे चाहिये कि उस पापी को सेतुवन्ध-तीर्थ जाने की व्यवस्था दे।

वह प्रायश्चित्त करने वाला रास्ते में धारों धणों से भीख माँग सकता है। वह केवल कुकर्मी की मिज्जा न ले।

तीर्थ-यात्रा में जाते समय छतरी और जूते न बर्तना चाहिये।

प्रायश्चित्त करने वाले को भीख माँगने के समय यह कहना चाहिये—“मैंने भारी कुकर्म किया है। मैंने महा पापकारी ब्रह्म-हत्या की है। मैं इस समय भीख माँगने के लिये आपके द्वार पर खड़ा हूँ।”

रास्ते में प्रायश्चित्त करने वाले को गोशाला, गांव, नगर, बन, तीर्थ और नदी के किनारे ठहरना चाहिये। साथ ही जहाँ जहाँ वह ठहरे वहाँ वहाँ उसे अपने पाप को वर्णन करना चाहिये।

अन्त में पवित्र समुद्र के पास जा कर, श्रीरामचन्द्र जी की माझा से नल बन्दर के बनाये हुए दस योजन लम्बे पुल के दर्शन करने से, दर्शन करने वाले को ब्रह्म-हत्या छूट जाती है।

यदि राजा ब्रह्म हत्या करे तो उसे अश्वमेध यज्ञ करना पड़ेगा।

पहले कहा हुआ मनुष्य सेतु के दर्शन कर और राजा यज्ञ के घोड़े के साथ घूम फिर कर, अपने अपने घर लौट आवें।

घर लौट कर के पुत्र और मित्र की सहायता ले कर, ब्राह्मणों को भोजन करावें और किसी चतुर्वेद्य ब्राह्मण को एक सौ गज दान दें।

इन ब्राह्मणों के प्रसाद ही से ब्रह्म-हत्याकारी पाप से छुट्ट कारा पाता है।

यज्ञ वा व्रत करने वाली खोंकी की हत्या करने से भी ब्रह्म-हत्या ही के प्रायश्चित्त का नियम पालन करना होगा।

जो ब्राह्मण मद्य पीते हैं, उनको समुद्र में मिलने वाली किसी नदी पर जा कर चान्द्रायण व्रत करना होगा ।

शराबी व्रत पूरा होने पर ब्राह्मणों को भोजन करावे और वैल समेत गोदान करे ।

जो आदमी ब्राह्मण का सोना चुरावे—उसका यही प्रायश्चित्त है कि वह अपने बध के लिये आप ही अपने हाथ में मूसल ले, राजा के पास जाय ।

यदि राजा उसे छोड़ दे, तो वह उस पाप से भी छुटकारा पा सकता है ।

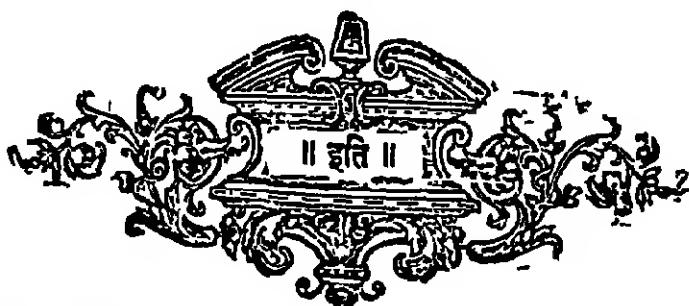
यदि राजा समझे कि पापी ने जान बूझ कर, चौरी की है, तो राजा को उचित है कि चौर को मार डालने की आज्ञा दे ।

जिस तरह जल के ऊपर तेल की एक धूँद फैल जाती है, उसी तरह एक साथ वैठने, सोने, चलने और बात चीत करने से एक आदमी का पाप दूसरे को लग जाता है ।

चान्द्रायण से, जैखाने से, तुला-पुरुष-व्रत करने से और गौ के पीछे पोछे फिरने से पापों का ढेर नष्ट हो जाता है ।

भगवान् पाराशर ने इस धर्म शाख का पांच-सौ निन्यानवे श्लोकों में बनाया है ।

जिसे खर्ग में जाने की अभिलाषा हो, उसे वेद की तरह, इस धर्म शाख का नित्य पढ़ना चाहिये ।



# चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा कृत

१—हिन्दी महाभारत जिल्दार ( सचित्र ) अठारहों

पर्व सहित	..	...	...	॥)
२—भारतीय उपाख्यान माला ( सचित्र ) जिल्दार				॥)
३—पौराणिक उपाख्यान माला सम्पूर्ण जिल्दार	...			॥)
४—राविन्सन क्रूसो ( सचित्र )	..	..		।)
५—हिन्दी पद्य-समग्र	•	...	...	॥=)
६—शब्दार्थ परिज्ञात ( कोष )	...		...	२)
७—श्रीकृष्ण कथा ( सचित्र )	...	...		।)
८—श्रीराम कथा ( सचित्र )	...	..		।)
९—आदर्श महिलाएँ, प्रथम भाग				॥=)
१०—आदर्श महिलाएँ, दूसरा भाग	...	...		॥=)
११—साविनी सत्यवान्	...		...	॥)
१२—सीताराम	.		...	॥=)
१३—द्वैत्या हरिदर्शन्द	..	...	..	॥)
१४—लावण्य और अनन्द	..	...		॥)
१५—हिन्दी शिक्षा	•	...	.	॥=)
१६—साहित्य विट्प	...	...	...	॥)
१७—हिन्दी पत्र शिक्षा	...	...	..	॥=)
१८—साहित्य सरोज	...	...	.	॥=)
१९—प्रवन्ध रचना शैली	...	..	...	॥=)
२०—हिन्दी गुटका कोष	..		.	॥॥)
२१—सरल हिन्दी व्याकरण	...	...	..	॥।)
२२—तुलसी संग्रह	..	...	...	॥॥)

रामनरायन लाल, बुकसेलर,

इलाहाबाद